दैनिक

पुष्पांजली टुडे

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 184 | ग्वालियर बुधवार, 26 अप्रैल 2023 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

एक नजर

अब अमेरिकन एयरलाइंस में पेशाब कांड, छह महीने में चौथी बार

नई दिल्ली। फ्लाइट में एक बार फिर से यात्री के ऊपर पेशाब करने का मामला सामने आया है. इस बार ये घटना अमेरिकल एयरलाइंस की न्यूयॉर्क से दिल्ली आ रही फ्लाइट में हुई. नशे में धुत यात्री ने दूसरे यात्री के ऊपर पेशाब कर दिया. दिल्ली पहुंचने पर एयरलाइंस ने एयरपोर्ट अधिकारियों को इसकी जानकार दी जिसके बाद यात्री को गिरफ्तार कर लिया गया. रविवार (23 अप्रैल) को अमेरिकन एयरलाइंस की फ्लाइट एए292 न्यूयॉर्क से दिल्ली आ रही थी. इसी दौरान फ्लाइट में सवार एक भारतीय नागरिक की दूसरे यात्री से बहस हो गई. आरोप है कि बहस के दौरान नशे धुत शख्स ने दूसरे यत्री के ऊपर पेशाब कर दिया. एयरलाइंस ने इस मामले में एयरपोर्ट प्रशासन को जानकार दी, जिसके बाद यात्री को हिरासत में ले लिया गया. यात्री के खिलाफ सिविल एविएशन एक्ट के तहत कार्रवाई की जा रही है. पीड़ित यात्री की शिकायत पर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गय है. फ्लाइट में पेशाब करने की यह पहली घटना नहीं है. पिछले कुछ दिनों में ऐसे कई मामले आ चुके हैं. छह महीने की बात करें तो यह चौथा मामला है. आइए पहले हुए मामलों पर नजर डालते हैं. 26 नवंबर को एयर इंडिया की फ्लाइट में बुजुर्ग महिला के ऊपर पेशाब के मामले ने काफी सुर्खियां बटोरी थी. यह फ्लाइट भी न्यूयॉर्क से दिल्ली आ रही थी. आरोप है कि नशे में टल्ली शंकर मिश्रा नाम के शख्स ने बुजुर्ग महिला के ऊपर पेशाब कर दी थी. शुरुआत में एयरलाइंस ने शिकायत पर गंभीरता से कार्रवाई नहीं की और आरोपी को जाने दिया गया. महिला ने इसकी शिकायत टाटा के सीईए चंद्रशेखरन से भी की थी. इसके बाद मामले का संज्ञान लिया गया और आरोपी की गिरफ्तार कर लिया गया. बाद में उसे जमानत पर रिहा कर दिया गया. इसके साथ ही एयरलाइंस ने मिश्रा के ऊपर 4 महीने का बैन लगा दिया था. ऐसी ही घटना बीते साल 6 दिसम्बर को हुई थी जब पेरिस से दिल्ली आ रही फ्लाइट में पुरुष यात्री ने महिला यात्री के कंबल पर पेशाब कर दिया था. यह घटना भी एयर इंडिया की फ्लाइट में हुई थी. जानकारी के मुताबिक, मामले में आरोपी ने पीड़ित महिला से लिखित में माफी मांगी थी. तीसरी घटना इसी साल 4 मार्च की थी. अमेरिकन एयरलाइंस की फ्लाइट न्यूयॉर्क से दिल्ली आ रही थी. इस दौरान एक यात्री बहुत नशे में था और उसने नींद में ही पेशाब शुरू कर दिया, जो उसके साथ बैठे यात्री पर आ गई. पीड़ित ने इस मामले में एयरलाइंस के स्टाफ से शिकायत की थी.

चाचा रामगोपाल को भूल गए अखिलेश यादव

नई दिल्ली। समाजवादी पार्टी ने राज्य में दो सीटों पर होने वाले उपचुनाव के लिए स्टार प्रचारकों की सूची मंगलवार को जारी की. इस सूची में सबसे ऊपर पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव का नाम था. इसके बाद पार्टी के तमाम दिग्गज नेताओं की नाम सूची में था. पार्टी की स्टार प्रचारकों की सूची में 40 लोगों का नाम था. हालांकि परिवार के अन्य लोगों का नाम स्टार प्रचारकों की सूची में है. सपा ने सोमवार को स्वार सीट पर होने वाले उपचुनाव के लिए अपने स्टार प्रचारकों की सूची जारी की. इस सूची में अखिलेश यादव ने परिवार से चाचा शिवपाल यादव और धर्मेंद्र यादव को भी जगह दी गई. लेकिन इसके अलावा अखिलेश यादव के परिवार के कई लोगों का नाम सूची से गायब है. इस सूची में उनके चाचा रामगोपाल यादव और पत्नी डिंपल यादव का भी नाम नहीं है. इसके अलावा सांसद शफीकुर्रहमान बर्क का नाम भी इस सूची में नहीं है. इस सूची में सबसे ऊपर पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष होने के नाते अखिलेश यादव का नाम है. इसके बाद राष्ट्रीय उपाध्यक्ष किरनमय नंदा का नाम है. तीसरे और चौथे नंबर पर राष्ट्रीय महासचिव आजम खान और शिवपाल सिंह यादव हैं. हालांकि पद के अनुसार राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव का नाम अखिलेश यादव के नीचे रहता है. अभी सपा में इस पद पर राम गोपाल यादव है. लेकिन उनका नाम इस सूची में नहीं है. इस सूची में मैनपुरी से सांसद और अखिलेश यादव की पत्नी डिंपल यादव का नाम है. इसके अलावा सपा सांसद शफीकुर्रहमान बर्क का नाम स्टार प्रचारों में नहीं है.

पाकिस्तान में 6 साल की हिंदू लड़की के साथ दो मुस्लिम लड़कों ने किया यौन शोषण

नई दिल्ली। पाकिस्तान में पिछले कुछ महीनों से शेख भिरकियो के सिंध गांव और टांडो अल्लाहयार जिले में हिंदू अल्पसंख्यकों को निशाना बनाया जा रहा है. बिटर विंटर के एक रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तान में मानवाधिकार संगठनों और कार्यकर्ताओं ने रितु (काल्पनिक नाम) की लड़की के साथ हुए यौन शोषण के मामले पर ध्यान केंद्रित किया. सिंध प्रांत के टांडो अल्लायार जिले के शेख भीरकिओ गांव की रहने वाली 6 साल की बच्ची का 23 साल के दो मुस्लिम लड़के ने यौन शोषण किया. इस घटना को तब अंजाम दिया गया, जब वो अपने घर के बाहर खेल रही थी. घटना के बाद रितु अपने घर से करीब छह किलोमीटर दूर बेहोशी की हालत में पड़ी मिली.स्थानीय लोगों ने रितु को घायल अवस्था में नजदीकी हॉस्पिटल में ले जाकर भर्ती किया. इसके बाद बच्ची के मां-बाप ने स्थानीय पुलिस स्टेशन में मामले को लेकर शिकायत दर्ज की. हालांकि, शिकायत दर्ज होने के बाद भी पुलिस ने किसी भी तरह की दिलचस्पी नहीं दिखाई और न ही किसी भी तरह के मदद का आश्वासन दिया. बिटर विंटर के रिपोर्ट के अनुसार सिंध प्रांत में मौजूद शेख भिरकियो और टांडो अल्लायार गांव में अति-कट्टरपंथी मुसलमानों की एक बड़ी उपस्थिति है. यहां अक्सर हिंदू अल्पसंख्यक को टारगेट किया जाता है. इस गांव में कई बार सांप्रदायिक हिंसा से जुड़े घटनाओं का केंद्र रहा है.

पहाड़ से लाकर ऑफिस में कर रहा था सप्लाई

38 लाख की ड्रग्स के साथ 29 साल का युवक गिरफ्तार

नई दिल्ली। मुंबई कांदिवली क्राइम ब्रांच की एंटी नारकोटिक्स सेल ने ड्रग्स कारोबारियों पर शिकंजा कसते हुए एक बीटेक इंजीनियर को चारकोप इलाके से गिरफ्तार किया है. आरोपी के पास से 1 किलो 230 ग्राम मलाना चरस जब्त किया है, जिसकी कुल कीमत करीब 38 लाख रुपये बताई जा रही है. पकड़े गए इंजीनियर का नाम प्रियांक मेहता है, जिसकी उम्र 29 साल है. आरोपी प्रियांक अहमदाबाद का रहने वाला है और मुंबई के मालाड पक्षिम माइंड स्पेस स्थित एक मल्टीनेशनल कंपनी के कॉल सेंटर में बतौर एडवाइजर के तौर पर काम करता है. कांदिवली एंटी नारकोटिक्स सेल ड्रग्स कारोबारियों पर शिकंजा कसते हुए जांच पड़ताल कर रही है.

नारकोटिक्स विभाग को यह जानकारी मिली थी कि चारकोप इलाके में एक शख्स शिमला से ड्रग्स लाकर मुंबई में सप्लाई करने का काम करता है. नारकोटिक्स विभाग ने उक्त जानकारी के साथ इलाके में जाल बिछाया. इलाके में पुलिस करीब 15 दिनों से नजर

गड़ाए हुए इंतजार में थी. इस दौरान पुलिस को जानकारी मिली कि चारकोप में रहने वाला प्रियांक मेहता शिमला गया हुआ है. जब वह शिमला से लौटा तो पुलिस जानकारी मिली की वह अपने साथ ड्रग्स का खेप लाया है. कांदिवली यूनिट ने उसके घर पर छापेमारी की और एक किलो से ज्यादा कि चरस बरामद की. क्राइम ब्रांच नारकोटिक्स ने बताया कि आरोपी बीटेक करने के बाद अब बतौर इंजीनियर किसी कंपनी में काम कर रहा है. वह मालाड स्थित मल्टीनेशनल कंपनी के कॉल सेंटर में काम करता है. जहां वह कंपनी में एडवाइजर के तौर पर कार्यरत है. पूछताछ में जानकारी मिली की ड्रग्स कारोबारी प्रियांक मेहता मालाड के कॉल सेंटर में काम करने वाले लड़के और लड़कियों को चरस (ड्रग्स) सप्लाई करने का काम करता था. फिलहाल पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट के तहत प्रियांक मेहता को चरस के साथ गिरफ्तार कर लिया है. पुलिस अब इस मामले में शिमला से मुंबई तक ड्रग्स सप्लाई करने वाले मुख्य आरोपी की तलाश में जुट गई है. पुलिस की पूछताछ में प्रियांक मेहता ने बताया कि वह काफी समय से कम समय में ज्यादा रुपये कमाने के लालच से काम करता है. उसने बताया कि ड्रग्स के कारोबार में 200 परसेंट से ज्यादा का मुनाफा हो रहा था.

घोटाले की राशि नहीं वसूल पाई सरकार तो हाई कोर्ट ने दिया अल्टीमेटम

मध्य प्रदेश में छात्रवृत्ति घोटाले में पैरामेडिकल कॉलेजों से पूरी राशि न वसूले जाने पर हाई कोर्ट ने राज्य सरकार को फटकार लगाई है. इसके साथ ही सभी राशि वसूले जाने के लिए एक दिन की मोहलत दी है. दरअसल, पैरामेडिकल कॉलेजों द्वारा छात्रवृत्ति के नाम पर 24 करोड़ रुपये हड़प लिए गए हैं जिनमें से सरकार केवल चार

करोड़ रुपये ही वसूल पाई है. मामले में 24 अप्रैल को हाई कोर्ट में सुनवाई हुई थी. चीफ रवि मलिमठ और जस्टिस विशाल मिश्रा की खंडपीठ ने सुनवाई के दौरान सरकार से कहा कि पैरामेडिकल कॉलेजों ने छात्रवृत्ति की राशि हड़प ली है, जिन्हें तत्काल वसूला जाएगा. इसके साथ ही सरकार को एक दिन की मोहलत दी गई है. राज्य सरकार की ओर से कोर्ट में यह जानकारी दी गई कि दो कॉलेजों के बैंक अकाउंट को सीज कर दिया गया है और घोटाले में शामिल अन्य कॉलेजों के खिलाफ भी कार्रवाई की जा रही है. बचे हुए कॉलेजों के खिलाफ एआरसी जारी की गई और कुर्की की कार्रवाई भी की जाएगी. इस मामले में कोर्ट में अगली सुनवाई 26 अप्रैल को की जानी है.

यह है पूरा मामला–एमपी लॉ स्टूडेन्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष अधिवक्ता विशाल बघेल ने एक जनहित याचिका दायर कर छात्रवृत्ति घोटाले पर कार्रवाई की मांग की थी. उन्होंने हाई कोर्ट को बताया था कि साल 2010 से 2015 तक प्रदेश के सैकड़ों निजी पैरामेडिकल कॉलेज संचालकों ने फर्जी छात्रों का प्रवेश दिखाकर सरकार से करोड़ों रुपये की छात्रवृत्ति की राशि डकार ली. वहीं जांच के दौरान यह बात भी सामने आई कि जिन छात्रों के नाम पर कॉलेजों ने सरकार से पैसे लिए वो परीक्षा में बैठे ही नहीं थे. इसके बाद 100 से ज्यादा कॉलेज संचालकों के खिलाफ केस दर्ज किया गया. अभी तक 93 पैरामेडिकल कॉलेजों में से केवल 20 क़ॉलेजों से ही वसूली हो पाई है.

किसानों को जून से मिलेगी बड़ी राहत

नई दिल्ली। महाराष्ट्र में जून से राज्य सरकार प्राकृतिक आपदा के कारण नुकसान के सर्वेक्षण के लिए सेटेलाइट तस्वीरें और ड्रोन सहित उच्च तकनीक का उपयोग करेगी और किसानों के लिए त्वरित राहत सुनिश्चित करेगी, सीएम एकनाथ शिंदे ने कहा कि उन्होंने जिला कलेक्टरों और संभागीय आयुक्तों को इस बारे में संबोधित किया है. सीएम ने अधिकारियों से कहा कि राज्य मशीनरी को फसल सर्वेक्षण के नए तरीकों के लिए खुद को अपडेट करना चाहिए जो किसी भी मानवीय हस्तक्षेप से बचेंगे और उच्च तकनीक पर भरोसा करेंगे. पिछले कुछ वर्षों से, राज्य के किसान बेमौसम बारिश, ओलावृष्टि और सूखे के रूप में जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों का सामना कर रहे हैं. टिकाऊ कृषि के लिए किसानों को सरकारी मदद की जरूरत है. सीएम ने कहा कि इसके लिए नुकसान का सर्वे तेजी से कराने

की जरूरत है. उन्होंने यह भी कहा कि सरकार ने प्राकृतिक आपदा के मामले में किसानों के मुआवजे को दोगुना कर दिया है. यह एनडीआरएफ से मिलने वाली राशि से दोगुना है. दिन भर चली बैठक में राज्य के महत्व, प्रमुख योजनाओं आदि के मुद्दों पर चर्चा हुई. बैठक के दौरान सौर कृषि ऊर्जा योजना 2.0 का भी शुभारंभ किया गया है. उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने योजना की शुरुआत करते हुए कहा., इस योजना का उद्देश्य किसानों को दिन के दौरान बिजली उपलब्ध कराने के लिए 7,000 मेगावाट सौर ऊर्जा पैदा करना और 30 फीसदी कृषि फीडरों को सौर ऊर्जा पर स्थानांतरित करना है. यह राज्य के लिए मिशन 2025 है. बता दें, बीते कुछ दिनों से महाराष्ट्र के किसान बेमोसम बारिश के कारण परेशान हैं. बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि से के कारण किसानों की फसलों को नुकसान पहुंचा है.

बाबा तुंगनाथ की चल विग्रह उत्सव डोली कैलाश के लिए रवाना

नई दिल्ली। पंच केदारों में तृतीय केदार के नाम से विश्व विख्यात भगवान तुंगनाथ की चल विग्रह उत्सव डोली अपने शीतकालीन गद्दीस्थल मर्कटेश्वर तीर्थ मक्कूमठ से कैलाश के लिए रवाना हो गयी है. भगवान तुंगनाथ की चल विग्रह उत्सव डोली के कैलाश रवाना होने पर महिलाओं ने मंगल गीतों व भक्तों ने बाबा शंकर के उद्घोषों से अगुवाई की. बाबा की डोली जब पुढखी नामक स्थान पर पहुंची तो भक्तों ने नये अनाज का भोग अर्पित कर विश्व शांति व समृद्धि

की कामना की. भोग अर्पित करने के बाद भगवान तुंगनाथ की चल विग्रह उत्सव डोली रात्रि प्रवास के लिए भूतनाथ मन्दिर पहुंची जिसके बाद 25 अप्रैल को भूतनाथ मन्दिर से रवाना होकर पाव, चिलियाखोड, पंगेर बनियाकुंड यात्रा प?ावों पर श्रद्धालुओं को आशीष देते हुए अन्तिम रात्रि प्रवास के लिए चोपता पहुंचेगी तथा 26 अप्रैल को भगवान तुंगनाथ की चल विग्रह उत्सव डोली के धाम पहुंचने पर भगवान तुंगनाथ के कपाट वेद ऋचाओं के साथ ग्रीष्मकाल के लिए खोल दिये जाएंगे. सोमवार को भगवान तुंगनाथ के शीतकालीन गद्दी स्थल मर्कटेश्वर तीर्थ मक्कूमठ में ब्रह्म बेला पर विद्वान आचार्यों ने पंचांग पूजन के तहत अनेक पूजाएं संपन्न कर भगवान तुंगनाथ सहित तैतीस कोटी देवी-देवताओं का आह्वान किया. ठीक 10 बजे भगवान तुंगनाथ की चल विग्रह उत्सव डोली का भव्य श्रृंगार कर आरती उतारी गई और इसके बाद भगवान तुंगनाथ की चल विग्रह उत्सव डोली ने मर्कटेश्वर तीर्थ की तीन परिक्रमा की और कैलाश के लिए रवाना हो गई. भगवान तुंगनाथ की चल विग्रह उत्सव डोली के कैलाश रवाना होने पर भक्तों ने पुष्प,अक्षत्रों से अगुवाई की और लाल-पीले वस्त्र अर्पित कर अपनी मन्नतें मांगी.

बच्ची की मौत के बाद भी हैवानियत करता रहा आरोपी

नई दिल्ली। उदयपुर जिले की मावली तहसील में नौ साल की बच्ची के साथ रेप के बाद उसके शरीर के 10 टुकड़े करने के मामले में पुलिस ने कोर्ट में चालान पेश कर दिया है.पुलिस ने यह काम 22 दिन में किया है. इस मामले में जो खुलासे हुए हैं, वो हैवानियत की हद हैं. इस मामले का आरोपी 20 साल का एक युवक है. उसने बच्ची के साथ रेप किया. रेप के दौरान उसने बच्ची का मुंह दबाकर रखा.इससे बच्ची की मौत हो गई थी. मौत के बाद भी युवक उसके साथ रेप करता रहा. बलात्कार के बाद युवक ने चाकू और पत्थर की सहायता से बच्ची के शव के 10 टुकड़े कर दिए थे. इस मामले के साक्ष्य जुटाकर पुलिस ने चार्जशीट अदालत में दायर की है. अब इस मामले की अगली सुनवाई छह मई को होगी.

आपको बता दें कि इस घिनौनी घटना का आरोपी युवक कमलेश पंवार है. इस मामले में कमलेश के माता-पिता साक्ष्य मिटाने के आरोपी बनाए गए हैं. उसकी मां किशन कुंवर और पिता राम पंवार ने सहयोग किया था. इन दोनों को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया था. इस समय तीनों जेल में है. पुलिस ने चार्जशीट में इस घटना को सिलसिलेवार तरीक से बताया है. इससे मामले की परतें खुलती चली गई हैं. पुलिस के मुताबिक आरोपी कमलेश पंवार मुंबई में अपने दोस्त की मीट की दुकान पर काम करता था. वहां उसने करीब एक महीने तक काम किया. इसके बाद वो वापस

उदयपुर आ गया था.इस कारण उसे मासूम को काटते हुए बिल्कुल भी दया नहीं आई. मौत के बाद वह बच्ची के शव को कमरे में ले गया. वहां उसने पत्थर और चाकू की सहायता से उसके शरीर के 10 टुकड़े कर दिए.उसने शव के टुकड़ों को थैली और प्लास्टिक की बोरी में रखकर घर में ही छुपा दिए.उसके माता-पिता को जब यह बात पता चली तो उन्होंने एक अप्रैल की शाम करीब छह बजे सबूत नष्ट करने की योजना बनाई. बोरी में रखे शव को लेकर कमलेश और उसकी मां घर के पास ही खंडहर में फेंकने गए. इस दौरान उसका पिता बरामदे में यह देखता रहा कि कोई आ तो नहीं रहा है. पुलिस ने चालान में यह भी बताया है कि आरोपी युवक पोर्न देखने का शौकीन था. उसका मोबाइल टटोला गया तो चौकाने वाली बातें सामने आई. उसने बच्ची के साथ रेप करने से पहले 23 बार पोर्न फिल्में देखी थीं.इससे पहले भी पोर्न मूवी देखने के रिकॉर्ड मिले हैं. यहीं नहीं जब घटना सामने आई तो शव तलाशने में भी आरोपी ने पुलिस की मदद की थी. डॉग स्क्वॉड के आने के बाद युवक और उसके माता-पिता संदेह के घेरे में आए. पुलिस ने कोर्ट से मिले आदेश के अनुसार साक्ष्यों और एफएसएल रिपोर्ट को चालान में जोड़ते हुए पेश किया है. पोक्सो अदालत 2 के पीठासीन अधिकारी अश्वीनी कुमार यादव ने छह मई को पुलिस की चार्जशीट पर सुनवाई नियत की है.

तीसरे दिन लगातार घटे कोरोना केस

नई दिल्ली। भारत में अब कोरोना वायरस की रफ्तार थमने लगी है. पिछले तीन दिनों से संक्रमण के नए मामलों में कमी देखने को मिल रही है. 25 अप्रैल को जारी हुए आंकड़ों के अनुसार, देशभर में पिछले 24 घंटे में 6 हजार 660 नए कोरोना मामले दर्ज किए गए. वहीं 9 हजार 213 लोगों ने कोरोना को मात दी यानि कि ठीक हो गए. इसी के साथ अब भारत में कोरोना के एक्टिव मामलों की कुल संख्या 63 हजार 380 हो गई है. पिछले कुछ दिनों से कोरोना के बढ़ते हुए मामले लोगों की परेशानी बढ़ा रहे थे. यहां तक कि प्रशासन भी अलर्ट हो गया था और लोगों से मास्क पहनने, शारीरिक दूरी बनाए रखने की अपील की थी लेकिन अब कोरोना अपने पांव समेटने लगा है और धीरे-धीरे घटने लगे हैं.

दुबई भाग गया अशरफ का साला

अतीक के वकील शौलत हनीफ को रिमांड में लेगी यूपी पुलिस

नई दिल्ली। उमेश पाल मर्डर केस में अतीक अहमद के वकील रहे सौलत हनीफ की मुश्किलें बढ़ने वाली हैं. सौलत को पुलिस कस्टडी में लेने की तैयारी कर रही है क्योंकि मामले की जांच करते समय पुलिस को इस बात के सबूत हाथ लगे हैं कि उसके फोन से असद को उमेश पाल के फोटो भेजे गए थे. शौलत, हनीफ हत्याकांड में दोषी पाए जाने के बाद प्रयागराज की नैनी जेल में उम्रकैद की सजा काट रहा है. उसको उमेश पाल अपहरण मामले में आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है. अब प्रयागराज के धूमनगंज थाने की पुलिस शौलत को उमेश पाल हत्याकांड में अपराधियों की हत्या की साजिश रचने और शूटरों की मदद करने को लेकर आरोपी बनाया है.

अशरफ का साला दुबई फरार–सूत्रों के मुताबिक पुलिस के कसते शिकंजे के बीच अशरफ अहमद का साला सद्दाम दुबई भाग गया है. सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक वह पश्चिम बंगाल के किसी एयरपोर्ट से दुबई गया है और वह 25 हजार रुपये

का इनामी बदमाश है. सद्दाम बरेली जेल में अशरफ से मुलाकात करवाता रहता था और अतीक की हत्या के बाद वह देश छोड़कर भाग गया. माफिया अतीक अहमद के कार्यालय पर सोमवार को जांच के लिए गई पुलिस को खून से सना चाकू और दीवारों पर खून के धब्बे मिले थे. पुलिस उपायुक्त नगर दीपक भूकर ने पत्रकारों को बताया कि अतीक के कार्यालय में खून से सना चाकू और खून से सने कपड़े मिले हैं. उन्होंने बताया कि फॉरेंसिक टीम ने खून के नमूनों को एकत्र कर लिया है जिसका विश्लेषण किया जाएगा, उसके बाद ही पता चल सकेगा कि यह किसका खून है. यूपी के सियासी हलको में इस बात को लेकर चर्चा तेज है कि क्या संसदीय परंपराओं के अनुरूप राज्य में किसी पूर्व लोक प्रतिनिधि की मृत्यु पर सदन में उसको श्रद्धांजलि दी जाती है तो ऐसे में सवाल उठ रहा है कि क्या तीन बार के विधायक-सांसद अतीक अहमद और उसके भाई अशरफ (पूर्व विधायक) को क्या विधानसभा में श्रद्धांजलि दी जाएगी. नियमों के मुताबिक यह फैसले विधानसभा अध्यक्ष ही ले सकते हैं.

पुलिस अधीक्षक के मार्गदर्शन में शिवपुरी पुलिस को मिल रहीं लगातार सफलताएँ, पुलिस थाना देहात द्वारा अधें कत्ल का खुलासा करते हुए सभी आरोपियों को किया गिरफ्तार

संवाददाता हरिओम परिहार की रिपोर्ट

दिनांक 17.04.23 को फरियादी मोनू उर्फ पुष्पेन्द्र पुत्र रतन सिंह तोमर उम्र 36 साल निवासी ए.बी. रोड तोमर होटल शिवपुरी ने सूचना दी की बांसखेडी के रोड के किनारे एक अज्ञात आदमी की सिर कुचली लाश पडी है। उक्त अज्ञात आदमी की हत्या किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा सिर पर पत्थर पटक कर की गई है। सिर पर पत्थर पटकने से चेहरा पहचान में नही आ रहा है।उक्त रिपोर्ट पर से थाना देहात में अज्ञात आरोपीगणो के विरूद्द हत्या का अ.क्र 99/2023 धारा 302,201 भादवि का पंजीबद्द कर विवेचना मे लिया गया।

पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री रघुवंश सिंह के निर्देशन में घटना स्थल का बारीकी से निरीक्षण किया गया ,घटना स्थल से खून लगे पत्थर व अन्य साक्ष्य एकत्रित किये गये। दिनांक 18.04.23 को अज्ञात मृतक की पहचान रविन्द्र जाटव निवासी पहाडखुर्द थाना मायापुर के रूप में हुई। श्रीमान पुलिस अधीक्षक शिवपुरी द्वारा प्रकरण की गंभीरता को देखते हुये अज्ञात आरोपीगणों के विरूद्द 5000 रू ईनाम की घोषणा की गई। अति0पुलिस अधीक्षक श्री प्रवीण भूरिया एवं एसडीओपी शिवपुरी श्री अजय भार्गव के मार्गदर्शन में अज्ञात आरोपीगणों की पतारसी हेतु थाना प्रभारी देहात को निर्देशित किया गया। सायबर से प्राप्त जानकारियों ,परिवारजनों से पूछताछ एंव घटना स्थल से प्राप्त साक्ष्य के आधार पर हत्या के कारण ज्ञात हुये की मृतक की पत्नि का एक व्यक्ति से पुराना प्रेम प्रसंग था, पता चलने पर मृतक

व उसके परिवारजनों ने प्रेमी आरोपी का घर आना जाना बंद करा दिया, जिससे करीबन डेढ वर्ष से प्रेमी आरोपी मृतक के घर नहीं जा पा रहा था एंव मृतक की पत्नि द्वारा भी प्रेमी आरोपी को मिलने से मना कर दिया गया था। जिस कारण प्रेमी आरोपी द्वारा मृतक रविन्द्र जाटव को रास्ते से हटाने का षडयंत्र बनाया जिसमें उसने अपने दो रिश्तेदार एंव रिश्तेदारों के दो मित्रों से दिनांक 16.04.23 को मृतक रविन्द्र जाटव को उसके गांव पहाडखुर्द थाना मायापुर से शराब की पार्टी के बहाने शिवपुरी बुला लिया और प्रेमी आरोपी के दो रिश्तेदार व उनके दो मित्रों ने मृतक को अधिक शराब पिला कर बांसखेडी रोड शिवपुरी ले जाकर पत्थरों से उसका सिर कुचल कर हत्या कर दी एंव मृतक रविन्द्र जाटव का मोबाईल, जेब मे रखे कागज व उसकी मोटरसाईकल को लेकर घटना स्थल से भाग गये। मृतक के मोबाईल को एक आरोपी के द्वारा पत्थर से कूट कर टुकडे-2 कर साक्ष्य छिपाने के उद्देश्य से फेंक दिया गया। जिससे मृतक की पहचान न की जा सके। दिनांक 24.04.23 को दो आरोपियों को पुलिस टीम द्वारा दविश देकर ग्राम विजरौनी एवं देवरी थाना इंदार से एंव 25.04.23 को शेष तीन आरोपियों को ईशागढ जिला अशोकनगर से गिरफ्तार किया गया एंव उनके कब्जे से मृतक की मोटरसाईकल,मृतक का टूटा हुआ मोबाईल, कागजात एंव हत्या में प्रयुक्त आरोपीगणों की दो मोटरसाईकल व मोबाईल बरामद कर अंधे कत्ल का खुलासा किया गया। इस अंधे कत्ल के खुलासे में वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी देहात निरीक्षक विकास यादव, उनि के.पी शर्मा,स.उ.नि. विनोद गुर्जर,प्र.आर.86 भगवत चतुर्वेदी,प्र.आ. 255 हरिकृष्ण,प्र.आर.264 सुनील जाट,प्र.आर.342 मोहन सिंह, प्र.आर.180 ह्रदेश पाराशर ,प्र.आर.380 धमेन्द्र सिंह सेंगर,आर. 374 गजेन्द्र सिंह,आर.710 दीपेन्द्र सिंह, आर 511 बदन सिंह , आर 30 गिरार्ज रावत, प्र आ489 चालक सुशील जाट , आर 259 शरद यादव, आर 708 रणवीर सिंह,आर. 246 मनोज गौड, आर.563 लाखन सिंह,आर.683 मनोज सिंह, आर.201 सुनील भार्गव,आर.182 दिनेश सिंह ,प्र.आर. देवेन्द्र सैन(सायबर सैल) की सराहनीय भूमिका रही।

भगवान के दर पर भक्त बनकर जाए अधिकारी,सेठ, बनकर नहीं: मुनिश्री प्रभात सागर जी

दैनिक पुष्पांजली टुडे संवाददाता जितेंद्र राय

मुंगावली। देश शास्त्र गुरु की पूजा भक्ति करने से समृद्धि आती है, पूजा करने के लिए गणवेश भी होना आवश्यक है,क्योंकि हम जैसे वस्त्र पहनते है वैसे भाव होते हैं शुद्ध पूजन के वस्त्र धोती दुपट्टा पुरुष वर्ग और साडी महिलाओं को बच्चीयों को सलवार सूट पहन कर ही मंदिर मे आना चाहिए। उक्त उद्गार आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य निर्यापक मुनि श्री अभय सागरजी महाराज के संघस्थ मुनि श्री प्रभात सागर जी महाराज ने नगर के पुराना बाजार स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में मंगलवार को धर्मसभा में व्यक्त किए आगे उन्होंने कहा कि भगवान के सामने आप मंदिर में पदाधिकारी बनकर ना जाये मंदिर में तो भक्त बन कर ही जाये। मंदिर के आप व्यवस्थापक हो सकते हैं लेकिन भगवान पर अधिकार नही जमा सकते हैं। अगर आप कोई नियम लेते है तो वह ले जिसे पालन कर सकते हैं। किसी अन्य के द्वारा आपके नियम का पालन न हो। आगे उन्होंने कहा कि हम जो भी कार्य करे पूर्ण मन लगाकर करे। एक समय में एक ही कार्य करे। भगवान के समवशरण मे आपस मे बैर रखने वाले साँप नेवला भी साथ बैठकर आपस की हर दुश्मनी छोड़ प्रभु की भक्ति करते हैं। आप तो इंसान है और समझदार भी है। अगर भगवान के दर पर आप के पास आपका शत्रु भी ख?ा हो तो, शत्रुता भुलाकर सरल भावों को बनाये रखे। तब आप का पूजन-भक्ति करना सार्थक है। भगवान की भक्ति और पूजा करते समय आप और भगवान के बीच कोई तीसरा ना आये इस प्रकार भक्ति करना चाहिए। सेठ हुकुमचंद भी इंदौर के सेठ थे। हजारों नौकर चाकर उनके यहाँ लगे थे। लेकिन जब वह मंदिर जाते थे, तो जहाँ भगवान विराजमान होते है, उस गर्भालय में स्वयं पोछा लगाते थे।

चाचौड़ा विधायक लक्ष्मण सिंह पहुंचे मधुसुदनगढ यहां विगत दिनों दिवंगत हुए लोगों के निवास पर पहुंच कर दी श्रद्धांजलि

प्रतीश अग्रवाल, पुष्पांजलि टुडे

मधुसूदनगढ़। क्षेत्रीय विधायक लक्ष्मण सिंह मंगलवार को मधुसूदनगढ़ दौरे के अंतर्गत यहां विगत दिनों दिवंगत हुए लोगों के परिजनों से मिलने के लिए उनके निवास पर पहुंचे समीपस्थ ग्राम नलखेड़ा के पश्चात नगर में सोमवार को दिवंगत हुए जिला कांग्रेस महासचिव नंदकिशोर शर्मा एवं भाजपा नेत्री संगीता क्रांति अग्रवाल के यहां स्व. रामविलास अग्रवाल नगर के छोकड़ वाले परिवार के स्व. कृष्ण मुरारी अग्रवाल के परिजनों से मिले इस अवसर पर उन्होने दिवंगत आत्मा को श्रद्धा सुमन अर्पित कर परिजनों से मुलाकात कर उनसे कुशलक्षेम जाना। इस अवसर पर पूर्व जनपद अध्यक्ष महेंद्र सिंह बापचा, नगर कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष खेमराज नेगी, विधायक प्रतिनिधि प्रीतम प्रजापति, दशरथ राव, पार्षद पति कमरलाल कुशवाह, उकावद सरपंच धीरज सिंह मीना, बड़ौदाकला सरपंच कृष्णपाल सिंह चौहान, पूर्व सरपंच प्रहलाद सिंह राजपूत, पार्षद रामनाथ सिंह भिलाला, विक्की अग्रवाल, विवेक गुर्जर सहित अन्य कांग्रेसी मौजूद थे ।

पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में शिवपुरी पुलिस की अनूठी पहल थाना यातायात द्वारा यातायात पाठशाला की शुरूआत की

शिवपुरी-पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री रघुवंश सिंह के निर्देशन में लोगों को यातायात नियमों के प्रति जागरुक करने के लिए एक नये प्रयास की शुरूआत की गई। आज दिनांक 25.04.23 को पुलिस अधीक्षक शिवपुरी द्वारा यातायात थाने पर यातायात पाठशाला का फीता काटकर

उद्घाटन किया। जिसका उद्देश्य यातायात नियमों का ज्यादा से ज्यादा प्रचार-प्रसार कर यातायात नियमों का पालन कराना है जिससे सडक दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सके। आज यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले 20 वाहन चालकों को थाना यातायात पर लाकर उन्हें यातायात पाठशाला में यातायात नियमों से संबंधित फिल्म दिखाई गई तथा पुलिस अधीक्षक शिवपुरी द्वारा सभी को हेलमेट,सीटबेल्ट,ट्रेफिक सिग्नल,लाईसेंस की अनिवार्यता आदि यातायात नियमों को बारीकी से समझाते हुये इन नियमों को ना मानने पर आमजन के जीवन पर पडने वाले खतरों से भी अवगत कराया गया, बाद उन्हें यातायात नियमों से संबंधित एक प्रश्न पत्र हल करने के लिए दिया, जिसमें 25 प्रश्न पूछे गये। प्रश्नों का उद्देश्य था कि वाहन चालकों को यातायात के नियमों के बारे में कितनी जानकारी है एवं उन्हें यातायात नियमों के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी देना था। यातायात पाठशाला पहली बार शिवपुरी जिले में शुरू की जा रही है। इस अवसर पर एसडीओपी शिवपुरी अजय भार्गव, रक्षित निरीक्षक शिवपुरी भारत सिंह यादव , थाना प्रभारी कोतवाली निरी. अमित भदौरिया, यातायात प्रभारी रणबीर सिंह यादव, उनि सुनील सिंह राजपूत, उनि अरविंद सिंह छारी, सूबे.गायत्री इटोरिया उपस्थित रहीं।

कार्यालय नगरपालिका परिषद भिण्ड, जिला-भिण्ड (म.प्र.)

क्रमांक/ई-टेण्डरिंग/निर्माण/2023/791 भिण्ड, दिनांक, 24/4/23

ई-निविदा आमंत्रण विज्ञप्ति

समस्त केन्द्रीयकृत पंजीयनधारी ठेकेदारों को एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि नगरपालिका परिषद भिण्ड को निम्नांकित कार्य के लिये नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के चालू सी.एस.आर. दिनांक 01 अगस्त, 2021 को अनुसूची से प्रतिशत दर आधार पर (फार्म 2.10) https://www.mptcndcrs.gov.in पर ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं।

क्र.	निविदा आमंत्रण का प्रकार	कार्य का नाम	अनुमानित लागत	धरोहर राशि	निविदा प्रपत्र शुल्क	ठेकेदार की श्रेणी	कार्य अवधि
1	2023_UAD_269641_1	प्रकरण क्रमांक 1749/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 32 में आर सी सी पुलिया निर्माण कार्य राज टाकी ज की पुलिया के पास।	419079/-	4200/-	2000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
2	2023_UAD_269641_2	प्रकरण क्रमांक 1744/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 32 में आर सी सी पुलिया निर्माण कार्य गिहाई वाली पुलिया के पास।	416364/-	4170/-	2000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
3	2023_UAD_269641_3	प्रकरण क्रमांक 1368/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 37 में आर सी सी नाला निर्माण कार्य अनिल शर्मा से बंगाली तक।	754779/-	7550/-	2000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
4	2023_UAD_269641_4	प्रकरण क्रमांक 1364/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 35 में सी सी नाली निर्माण कार्य सरस्वती नगर में गोविंद अग्रवाल राजीव सिंह यादव रामहेत भदौरिया राजाराम यादव दिलीप सिंह यादव तक।	811027/-	8120/-	2000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
5	2023_UAD_269641_5	प्रकरण क्रमांक 1659/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 35 में सी सी रोड मय सी सी नाली निर्माण कार्य मेहरवान सिंह से कुलदीप भदौरिया तक	1771390/-	17715/-	2000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
6	2023_UAD_269641_6	प्रकरण क्रमांक 1361/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 35 में सी सी रोड मय सी सी नाली निर्माण कार्य केप्टन यादव से मुकेश यादव सरस्वती नगर में	1526615/-	15270/-	2000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
7	2023_UAD_269641_7	प्रकरण क्रमांक 1384/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 33 में सी सी रोड मय सी सी नाली निर्माण कार्य हरेन्द्र सिंह वाली गली में।	462695/-	4630/-	2000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
8	2023_UAD_269641_8	प्रकरण क्रमांक 1385/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 33 में आर सी सी नाला निर्माण कार्य मेला से थाना अजाक तक	756138/-	7565/-	2000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
9	2023_UAD_269641_9	प्रकरण क्रमांक 1658/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 29 में सी सी रोड मय सी सी नाली निर्माण कार्य भैरो बाबा मंदिर से सेंगर के मकान तक	984694/-	9850/-	2000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
10	2023_UAD_269641_10	प्रकरण क्रमांक 1369/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 32 में सी सी रोड मय सी सी नाली निर्माण कार्य हनुमान मंदिर के पास से नाले की पुलिया तक।	375378/-	3760/-	2000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
11	2023_UAD_269641_11	प्रकरण क्रमांक 1370/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 32 में सी सी रोड मय सी सी नाली निर्माण कार्य बाल बहादुर से दीक्षित के मकान तक।	767906/-	7680/-	2000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
12	2023_UAD_269641_12	प्रकरण क्रमांक 1664/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 28 में सी सी रोड मय सी सी नाली निर्माण कार्य गीता भवन वाली गली	1216538/-	12170/-	2000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
13	2023_UAD_269641_13	प्रकरण क्रमांक 1375/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 7 में सी सी रोड मय सी सी नाली निर्माण कार्य सरनाम सिंह मायाराम, धानुक लक्ष्मण धर्म यादव के मकान तक।	1057499/-	19880/-	2000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
14	2023_UAD_269641_14	प्रकरण क्रमांक 1380/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 7 में सी सी रोड मय सी सी नाली निर्माण कार्य रामसहाय, अशोक भदौरिया दीपू भदौरिया वाली गली।	1067679/-	10580/-	2000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
15	2023_UAD_269641_15	प्रकरण क्रमांक 1416/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 35 में सी सी रोड मय सी सी नाली निर्माण कार्य रूपेन्द्र सिंह से संजय सिंह यादव के मकान तक।	2699406/-	20250/-	5000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
16	2023_UAD_269641_16	प्रकरण क्रमांक 1485/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 22 में सी सी रोड मय सी सी नाली निर्माण कार्य संतोष प्रजापति के मकान से बलवीर सिंह के मकान तक तथा बलवीर के मकान से थापक के मकान के सामने बुनियादी स्कूल के पीछे तक।	1598548/-	11990/-	2000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
17	2023_UAD_269641_17	प्रकरण क्रमांक 1423/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 22 में सी सी रोड मय सी सी नाली निर्माण कार्य राकेश अरेले से विद्या निकेतन आंगनवाडी तक।	2713214/-	20350/-	5000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह
18	2023_UAD_269641_18	प्रकरण क्रमांक 1425/2022x3/4 के अंतर्गत वार्ड क्र. 25 में सी सी रोड मय सी सी नाली निर्माण कार्य श्याम सिंह से शिवा राजावत तक।	2080855/-	15610/-	5000/-	केन्द्रीयकृत पी.डब्ल्यू.डी. रजिस्ट्रेशन	03 माह

शर्तें:-

1. टेण्डर फार्म दिनांक 21.04.2023 समय प्रातः 11.00 बजे से दिनांक 08.05.2023 को समय 17:30 बजे तक ऑनलाईन क्रय किये जा सकते हैं।
2. निविदाएं (Bidsubmission end date) 08.05.2023 समय 17:30 बजे तक ऑनलाईन की जा सकती है।
3. प्राप्त निविदाओं का Mandatory Submission Envclopc-A दिनांक 10.05.2023 को समय दोपहर 12:30 बजे के बाद खोला जावेगा तथा Financial Bid Envclopc-C दिनांक 10.05.2023 को 15:00 बजे के बाद खोला जावेगा।
4. किसी भी दर को स्वीकृत/अस्वीकृत करने का पूर्ण अधिकार सक्षम प्राधिकारी को सुरक्षित होगा तथा बिना धरोहर राशि एवं सशर्ते निविदा पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।
5. निविदा संबंधी विस्तृत जानकारी https://www.mptcndcrs.gov.in पर या कार्यालयीन समय में कार्यालय की निर्माण शाखा से प्राप्त की जा सकती है तथा निविदा में यदि कोई भी संशोधन किया जाता है तो उसे सिर्फ ई-टेण्डरिंग को बेवसाइट पर ऑनलाइन से प्रकाशित किया जायेगा, इस हेतु पृथक से कोई भी सूचना समाचार पत्र में प्रकाशित नहीं की जावेगी। निविदा प्रपत्र की विस्तृत जानकारी बेवसाइट https://www.mptcndcrs.gov.in पर देखी जा सकती है।

वर्मा अमिल बाल्मीकि
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद भिण्ड, जिला-भिण्ड (म.प्र.)

वीरेन्द्र तिवारी
मुख्य नगरपालिका अधिकारी
नगर पालिका परिषद भिण्ड, जिला-भिण्ड (म.प्र.)

थाना बदरवास पुलिस ने पकड़े अवैध रुप से रेत (बजरी) से भरे दो ट्रेक्टर मय ट्राली

अनिल कुशवाह, पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी-पुलिस अधीक्षक शिवपुरी के द्वारा जिले में रेत माफिया आईपीएल सट्टा शराब माफिया अवैध मादक पदार्थ भूमफिया के विरूद्ध कडी कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये थे तथा रेत माफिया का जीरो टोरलैंस अपनाने के निर्देश दिये गये थे उक्त निर्देश के पालन मान अति. पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री प्रवीण भूरिया के निर्देशन में तथा एसडीओपी कोलारस श्री विजय यादव के मार्गदर्शन में आज दिनांक 25/04/2023 को दोपहर को थाना बदरवास पुलिस को मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम लिलवारा सिन्ध नदी से दो ट्रेक्टरो मे अवैध रुप से सिन्ध नदी की रेत भरकर ले जा रहै है उक्त सूचना पर से ग्राम लिलवारा सिन्ध नदी के घाट पर दबिस दी गई तो एक पावर ट्रेक ट्रेक्टर क्र. एमपी 33 एबी 0924 एंव एक सफेद कलर का आयशर ट्रेक्टर क्र.एमपी 33 एबी 4522) भरकर फरिवहन करते पाये गये दोनो के

मे अवैध रुप से सिन्ध नदी की रेत (बजरी पास बजरी भरकर ले जाने की राँयल्टी नही थी जिन्है मौके पर विधिवत जप्त कर एंव आरोपी दीमान पुत्र मोतीलाल कुशवाह उम्र 21 साल निवासी ग्राम डगोरा थाना इन्दार एंव अक्षय पुत्र बलवीरसिंह यादव उम्र 22 साल निवासी ग्राम डगोरा को गिरफ्तार किया गया आरोपी गणो के विरूद्ध धारा 379 ता0हि0 4(ए) 21(1) खनिज अधिनियम 1957 के तहत अपराध क्रंमाक 136/23 धारा 379 ता.हि. 4(ए) 21(1) खनिज अधिनियम 1957 पंजीबद्ध किया गया है । इनकी रही भूमिका- निरीक्षक सुरेश शर्मा, उनि देवेन्द्रसिंह तोमर, सउनि सतेन्द्र सिंह भदौरिया, आर. 1073 अनूप, आर 877 दीपक शर्मा आर 846 महेश पटेलिया, आर. 789 ब्रजेश कुमार, आर आर 779 नेपालसिह आर 89 रामसिह पटेलिया आर 810 निर्मल, आर. चालक दीनू, आर. राजू, सै, 21 वैदप्रकाश।

कॉलेज में प्रवेश लेते ही बनेंगे वोटर कार्ड

अनिल कुशवाह, पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप मतदाता सूची को अद्यतन किए जाने की कार्यवाही की जा रही है। आयोग के निर्देशानुसार अब साल में 1 जनवरी, 1 अप्रैल, 1 अगस्त एवं 1 अक्टूबर को पात्र मतदाताओं के नाम मतदाता सूची में जोड़े जा सकेंगे। मतदाता सूची को अद्यतन बनाए रखने के लिए शैक्षणिक संस्थाओं में कुल विद्यार्थियों के नाम बढ़ाने पर आयोग का विशेष ध्यान केंन्द्रित है, जो इस शैक्षणिक सत्र में संस्थाओं में प्रवेश ले रहे है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा इस संबंध में जिले की सभी संस्था प्रमुखों को निर्देश दिए है कि वे छात्र-छात्राओं जो कॉलेज में अध्ययनरत है, अथवा प्रवेश लेने के लिए आवेदन किया गया है उनकी आयु 1 अक्टूबर 2023 की स्थिति में 18 वर्ष पूर्ण हो रही है, तो उनका मतदाता के रूप में पंजीकरण आवश्यक रूप से कराया जाकर मतदाता सूची में नाम बड़ाने की कार्यवाही की जाए। जिला निर्वाचन कार्यालय शिवपुरी से प्राप्त जानकारी के अनुसार कोई भी व्यक्ति मतदाता के रूप में अपना पंजीकरण स्वयं अपने

मोबाइल पर वोटर हेल्पलाईन एप (वीएचए) के माध्यम से अथवा एनवीएसपी पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कराकर नाम बड़ाने का आवेदन दे सकता है। इस संबंध में संबंधित क्षेत्र के मतदात सूची कार्य के लिए नियुक्त बूथ लेवल अधिकारी की भी मदद ली जा सकती है। इस संबंध में उप जिला निर्वाचन अधिकारी बिजेन्द्र यादव द्वारा बताया गया कि मतदाता सूची को शुद्ध करने का कार्य 18 अप्रैल से 15 मई 2023 के मध्य डोर-टू-डोर सत्यापन करके किया जा रहा है। इस अभियान में पात्र मतदाताओं के नाम जोड़ना, मृतक मतदाताओं के नाम घटाना, खराब गुणवत्ता वाले फोटो को बदलना, एक मकान नम्बर के मतदाताओं को उसी मकान नम्बर में शिफ्ट करना, दोहरी प्रविष्टि या समान फोटो वाले मतदाता को चिन्हित कर कार्यवाही करना ऐसे कार्य आयोग द्वारा विशेष अभियान चलाकर कराए जा रहे है।

विश्वकर्मा समाज ने आयोजित किया रक्तदान शिविर

रीतेश अवस्थी, पुष्पांजली टुडे

दमोह । महज जीना ही जिंदगी नहीं होती, इंसानियत ही इंसान को हमेशा जिंदा रखती है,इंसान अगर कोई बात को ठान ले तो हर कार्य आसान दिखता है ऐसा ही कुछ करके दिखाया विश्वकर्मा समाज नवयुवक मित्र मंडल के युवाओं ने जिन्होंने आज जिला अस्पताल में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। मंडल के सक्रिय सदस्य प्रमोद विश्वकर्मा ने बताया कि शिविर लगाने का मुख्य उद्देश्य युवाओं को रक्त दान के प्रति प्रेरित करना है ताकि वह भी रक्तदान कर जरूरत मंद के काम आ सके। रक्तदान करने से अगर किसी की जान बचती है तो सभी को आगे आकर इसमें सहयोग करना चाहिए। रक्तदान करने से अनेक फायदे होते हैं एवम कई बीमारियों से छुटकारा भी पाया जा सकता है रक्तदान शिविर में समाज के 38 युवाओं ने रक्तदान के लिए अपनी सहमति दी जब भी किसी जरूरत मंद को रक्त की आवश्यकता पड़ेगी समाज के युवा रक्तदान के लिए संकल्पित रहेंगे। इस अवसर पर विश्वकर्मा समाज के बड़ी संख्या में युवाओं में संतराम, छोटू, गगन, चंदू, दीपक, ओम, नीरज, मनीराम, महेंद्र, प्रवीण, रोहित, शंभू, संदीप, राजकुमार, सुरेंद्र, वीरेंद्र, विवेक, प्रमोद, अजय, पवन, हिमांशु, बाबूलाल, गुड्डू, देवेंद्र, दुर्गेश, नोनेलाल, शिवम, अमित, सौरभ, अभिषेक, कपिल, दिनेश, नरेश, अरुण, दीपेश, श्याम, सूरज, बंटी, विनय, का विशेष योगदान रहा ।

विधायक पर लगाये गंभीर आरोप

शराबियों और जुआरियों का अड्डा बनी विधायक द्वारा बनाई गौशाला : समाजसेवी ओम रैकवार

पुष्पांजलि टुडे

दमोह। विगत कुछ माह पूर्व दमोह में पूज्य बागेश्वर धाम सरकार की प्रेरणा से विधायक अजय कुमार टंडन के द्वारा एक गौशाला का निर्माण दिनांक 31 दिसम्बर को ग्राम मारुताल में संपन्न हुआ था। जिससे गौ प्रेमियों को गौशाला के निर्माण को लेकर खुशी का माहौल था लेकिन दिनांक 24 अप्रैल 2023 तक अधूरी पड़ी गौशाला को देखकर शहर के युवा समाजसेवी ओम रैकवार,बिष्णु साहू एवं उनकी टीम गौशाला में गौमाताओ के लिए भोजन लेकर पहुंची तो वहाँ का नजारा कुछ अलग ही देखने को मिला जिससे उनकी टीम में नाराज़गी देखी गई। टीम के जागरूक सदस्य ओम रैकवार ने विधायक अजय टंडन के खिलाफ सोशल साईट पर मोर्चा खोल दिया और विधायक पर गंभीर आरोप लगाए।युवा समाजसेवी ओम रैकवार का कहना है कि वह जब गौशाला पहुंचे तो गौशाला में एक भी गौमाता दिखाई नहीं दी एवं गौशाला का निर्माण अधूरा पड़ा है, उन्होंने आरोप लगाते हुये यह भी कहाँ कि गौशाला में शराब की बोतले और ताश के पत्ते दिखाई दिए जिससे प्रतीत होता है यहाँ असामाजिक तत्वों का जमावड़ा रहता है।गौशाला कि अव्यवस्था देखकर ओम रैकवार ने विधायक पर आरोप लगाते हुये कहाँ कि यह उनकी नाकामी है जिससे अभी तक गौ शाला का निर्माण नहीं कराया गया।

सामान्य सभा की बैठक 28 अप्रैल को

पन्ना। जिला पंचायत की सामान्य सभा की बैठक जिला पंचायत कार्यालय के सभाकक्ष में 28 अप्रैल को दोपहर 12 बजे से आयोजित की गई है। इस अवसर पर गणवेश वितरण, हैण्डपम्प व पेयजल समस्या, विद्युत वितरण कार्यों, गेहूं व धान उपार्जन तथा वन सुरक्षा की समीक्षा की जाएगी। जिला पंचायत सीईओ संघ प्रिय ने सर्वसंबंधितों से बैठक में उपस्थित रहने का आग्रह किया है।

रूंझ और मझगांय मध्यम सिंचाई परियोजना की मिली पुनरीक्षित प्रशासकीय स्वीकृति

27 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई क्षमता विकसित होगी, सांसद एवं मंत्री का रहा उल्लेखनीय योगदान

संभागीय ब्यूरो गौरी शंकर कुशवाहा, पुष्पांजली टुडे

पन्ना – सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा और पन्ना विधायक एवं खनिज साधन व श्रम मंत्री श्री बृजेन्द्र प्रताप सिंह के विशेष प्रयासों के फलस्वरूप जिले की दो मध्यम सिंचाई परियोजनाओं की पुनरीक्षित प्रशासकीय स्वीकृति मिली है। जिले को इतनी बड़ी सौगात दिलाने में उक्त दोनों जनप्रतिनिधियों का सार्थक प्रयास और योगदान उल्लेखनीय रहा है। सांसद श्री शर्मा और मंत्री श्री सिंह ने समय-समय पर केन्द्र व राज्य सरकार से आवश्यक समन्वय व संपर्क के जरिए परियोजना के क्रियान्वयन में आने वाले अवरोध को दूर करवाया। मुख्यमंत्री श्री चैहान की अध्यक्षता में मंगलवार को भोपाल में सम्पन्न हुई कैबिनेट बैठक में रूंझ व मझगांय सिंचाई परियोजना के पुनरीक्षित प्रस्ताव की स्वीकृति प्रदान की गई। कैबिनेट मंत्री श्री सिंह ने मुख्यमंत्री को किसानों का सच्चा हितैषी बताते हुए कहा कि आज मंत्रिपरिषद की बैठक में पन्ना जिले के किसानों और जनता के लिए सिंचाई परियोजनाओ के लिए अतिरिक्त रूप से मंजूरी दी गई है। इससे पन्ना क्षेत्र के किसानों को और अधिक फायदा होगा तथा माइक्रो सिंचाई परियोजना से पानी का बेहतर तरीके से उपयोग किया जा सकेगा। रूंझ मध्यम सिंचाई परियोजना पन्ना जिले की अजयगड़ तहसील में प्रस्तावित है। परियोजना के अंतर्गत 64.70 एमसीएम के बांध निर्माण एवं पाइप नहर का निर्माण किया जाना प्रस्तावित है। परियोजना से पन्ना जिले की अजयगड़ तहसील के 47 ग्रामों की 14 हजार 450 हेक्टेयर भूमि पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। परियोजना की प्रशासकीय स्वीकृति वर्ष 2011 में 12 हजार 550 हेक्टेयर के लिए प्रदान की गई थी, जिसकी लागत उस समय 269

करोड़ 79 लाख रूपए थी। वर्ष 2016 में माइक्रो सिंचाई प्रणाली को बड़ावा देने के लिए तथा पानी की बचत के लिए खुली नहर के स्थान पर पाइप नहर प्रणाली को सम्मिलित किया गया था। वृद्द परियोजना नियंत्रण मण्डल की स्वीकृति के बाद वर्ष 2018 से बांध निर्माण का कार्य तथा वर्ष 2019 से पाइप नहर का निर्माण कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में परियोजना का कार्य प्रगतिरत है। बांध का कार्य 75 प्रतिशत तथा पाइप नहर का कार्य 25 प्रतिशत पूर्ण हो चुका है। भू-अर्जन अधिनियम 2013 के लागू होने तथा यूसीएसआर वर्ष 2017 संशोधित होने के कारण परियोजना की लागत में 243 करोड़ 93 लाख रूपए की वृद्धि अनुमानित है। परियोजना के निर्माण कार्य को पूरा करने तथा 14 हजार 450 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई विकसित करने के लिए 513 करोड़ 72 लाख रूपए का पुनरीक्षित प्रस्ताव तैयार किया गया है। इसी प्रकार मझगांय मध्यम सिंचाई परियोजना भी पन्ना जिले की अजयगड़ तहसील में प्रस्तावित है। परियोजना के अन्तर्गत 112.62 एमसीएम के बांध निर्माण एवं पाइप नहर का निर्माण किया जाना प्रस्तावित है। परियोजना से पन्ना जिले की अजयगड़ तहसील के 38 ग्रामों की 13 हजार 60 हेक्टेयर भूमि पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। परियोजना की प्रशासकीय स्वीकृति वर्ष 2012 में 12 हजार 600 हेक्टेयर के लिए प्रदान की गई थी, जिसकी लागत उस समय 358 करोड़ 99 लाख रूपए थी। वर्ष 2016 में माइक्रो सिंचाई प्रणाली को बड़ावा देने के लिए तथा पानी की बचत के लिए खुली नहर के स्थान पर पाइप नहर प्रणाली को सम्मिलित किया गया। वृद्द परियोजना नियंत्रण मण्डल की स्वीकृति के बाद वर्ष 2018 से बांध निर्माण का कार्य तथा वर्ष 2019 से पाइप नहर का निर्माण कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में परियोजना का कार्य प्रगतिरत है। बांध का कार्य 52 प्रतिशत तथा पाईप नहर का कार्य 30 प्रतिशत पूर्ण हो चुका है। भू-अर्जन अधिनियम 2013 के लागू होने तथा यूसीएसआर वर्ष 2017 संशोधित होने के कारण परियोजना की लागत में 334 करोड़ 65 लाख रूपए की वृद्धि अनुमानित है। परियोजना के निर्माण कार्य को पूरा करने तथा 13 हजार 60 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई विकसित करने के लिए 693 करोड़ 64 लाख रूपए का पुनरीक्षित प्रस्ताव तैयार किया गया है।

सिंचाई परियोजना से अतिरिक्त पेयजल की सुविधा भी मिलेगी-रूंझ एवं मझगांय मध्यम सिंचाई परियोजना के क्रियान्वयन से किसानों को सिंचाई सुविधा के साथ-साथ नागरिकों को पेयजल की आपूर्ति भी सुनिश्चित की जाएगी। रूंझ परियोजना से पन्ना नगर को अमृत 2.0 योजना के तहत पेयजल की आपूर्ति सुलभ होगी। इसके लिए रूंझ से पन्ना नगर तक पाइपलाइन बिछाने का कार्य किया जाएगा। इसी तरह मझगांय परियोजना से जल जीवन मिशन अंतर्गत ग्रामीण परिवारों को हर घर नल से जल की सुविधा मिल सकेगी। इससे अजयगड़, पन्ना और गुनौर विकासखण्ड के लगभग 600 ग्राम लाभांवित होंगे।

सीरवी किसान छात्रावास में अखिल भारतीय सीरवी युवा परिषद की हुई बैठक में चर्चा

युवाओं को किया प्रेरित, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का दिया संदेश

पुष्पाजंली टुडे/नारायणलाल सेंणचा

पाली। समाज के युवाओं की सामाजिक व राजनीतिक भागीदारी वह बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ को लेकर अखिल भारतीय सीरवी युवा परिषद ने मंथन कीया। इस कार्यक्रम में अखिल भारतीय सीरवी युवा परिषद व राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश चौधरी के नेतृत्व में एक दिवसीय युवाओं के सामाजिक संरचना को लेकर सीरवी किसान छात्रावास में बैठक आयोजित हुई इस बैठक को संबोधित करते हुए अखिल भारतीय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पाली सांसद पी पी चौधरी ने अपने वक्तव्य में समाज के युवाओं को समाज के प्रति वह शिक्षा के प्रति और बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ अभियान की जानकारी दी, पी पी साहब ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पर ज्यादा जोर दिया उन्होंने कहा की एक बेटी 2 घरों के आंगन को रोशन करती है । अधिवेशन को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश चौधरी ने अपने कार्य काल से अब तक युवा परिषद द्वारा किए गए कार्यों को समाज के पटल पर रखा साथ ही युवा परिषद द्वारा चलाया जाने वाले आगामी कार्यों की समीक्षा भी की समाज में फैली कुरीतियों को समाप्त करने के लिए युवाओं को बीड़ा उठाने का आह्वान किया गया तथा समाज को एकजुट रखने, संगठित रखने व धर्म के प्रति जागरूक रहने का भी आह्वान किया गया , उन्होंने बताया की युवा समाज की रीढ़ की हड्डी होती युवा जगेगा तो समाज जगेगा , समाज को जागरूक करने में युवाओं का अहम भागीदारी रहती है ।

प्रदेश अध्यक्ष प्रकाश सोलंकी ने युवाओं को एक रहकर संगठन को मजबूत बनाने के लिए युवाओं को ज्यादा से ज्यादा समाज से जोड़ना एवं संगठन को मजबूत बनाने का मंत्र दिया , राष्ट्रीय महामंत्री भंवर चौधरी किसान केसरी ने सीरवी समाज की राजनीति में हम भागीदारी निभाने हेतु युवाओं को अधिक से अधिक समाज से जुड़ने का मंत्र दिया सबको एकता में रहकर समाज को आगे बढ़ाना है, एवं नशे से युवाओं को दूर रहने का कहा । मीटिंग में रमेश करनवा, देवी सिंह, सज्जन सीरवी, नारायण लाल मुलेवा, प्रभु राम चौधरी, रमेश चौधरी, सुशीला मंजू परिहार, अंजू चौधरी विजय चौधरी, राजेश चौधरी ठाकुर ,मुकेश चौधरी रमेश सीरवी, तरुण, धनाराम राठौड़, डॉक्टर मांगीलाल, प्रफुल्ल आगलेचा, महेंद्र सिरवी, दिनेश परिहार, हरीश सिरवी, केसाराम,गौतम चौधरी,बाबूलाल सिरवी, भरत बरफा, योगेश, परदीप सिरवी आदि उपस्थित थे।

सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के तहत तीन पहिया वाहन चालकों को थाना प्रभारी ने पढ़ाया यातायात नियमों का पाठ

वाहन चालकों को गुलाब का फूल भेंट कर यातायात नियमों का पालन करने की दी समझाईश, यातायात नियमों का पालन नहीं करने पर की जायेगी चालानी कार्यवाही

पंकज त्रिपाठी
दैनिक पुष्पांजली टुडे

मेहगांव (भिण्ड)। पुलिस मुख्यालय भोपाल द्वारा 24 से 30 अप्रैल 2023 तक संपूर्ण प्रदेश में संयुक्त सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, इसी तारतम्य में पुलिस अधीक्षक शैलेंद्र सिंह चौहान, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमलेश कुमार खरपूसे तथा एसडीओपी मेहगांव आर के एस राठौर के निर्देशन में थाना प्रभारी मेहगांव निरीक्षक रविंद्र शर्मा द्वारा तीन पहिया वाहन चालकों को थाने पर बुलाकर उनकी मीटिंग ली गई मीटिंग के दौरान भिंड तिराहा, गोरमी तिराहा, हाट बाजार तथा अन्य भीड़भाड़ वाले स्थानों पर रोड पर जगह-जगह वाहनों को नहीं खड़ा करने, क्षमता से अधिक सवारी का परिवहन नहीं करने, हाईवे पर अनावश्यक रूप से वाहन नहीं खड़ा करने, अत्याधिक गति से वाहन नहीं चलाने की हिदायत दी । अधिकांश तह देखा जाता है बस या अन्य कोई सवारी वाहन जब हाईवे पर आकर रूकता है तो उसके आसपास तीन पहिया वाले इकट्ठा हो जाते हैं और हाईवे पर चारों तरफ से उस सवारी वाहन को घेर लेते हैं, जिससे जाम की स्थिति पैदा हो जाती है यही हाल बाजार में भी होता है, यातायात को सुचारू तथा निर्बाध रूप से चलाने हेतु थाना प्रभारी मेहगांव रविंद्र शर्मा ने पहल की है ।

जल जीवन मिशन अंतर्गत 30 जून लंबित कार्यों को पूर्ण करें: कलेक्टर

संभागीय ब्यूरो गौरीशंकर कुशवाहा की पुष्पांजली टुडे की खबर

पन्ना – कलेक्टर श्री संजय कुमार मिश्र ने जल जीवन मिशन अंतर्गत जिले में क्रियान्वित एकल व समूह नल-जल योजनाओं के सभी लंबित कार्यों को अनिवार्य रूप से आगामी 30 जून तक पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने गत सोमवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में विभागीय अधिकारियों और ठेकेदारों के साथ परियोजना के तहत अपूर्ण कार्यों की समीक्षा की तथा 80 प्रतिशत पूर्णता की परियोजना को आगामी 31 मई तथा 85 प्रतिशत पूर्णता की योजना को 15 मई तक पूर्ण करने और एक्शन प्लान प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही पूर्ण हो चुकी 83 परियोजनाओं को 30 अप्रैल तक ग्राम पंचायत को हैण्डओवर करने के निर्देश भी दिए गए। उन्होंने कहा कि निर्माण कार्य जिम्मेदारी के साथ गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूर्ण किए जाएं। अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से कार्यों की मॉनीटरिंग भी सुनिश्चित की जाए। कलेक्टर श्री मिश्र ने स्कूल और आंगनबाड़ी केन्द्रों में जल जीवन मिशन अंतर्गत उपलब्ध सुविधाओं के संबंध में जानकारी ली तथा ईई पीएचई को चालू व बंद नल कनेक्शन का नियमित रूप से टीम के माध्यम से सत्यापन कराने के निर्देश दिए। साथ ही विधिवत तरीके से जिला कमेटी की रिपोर्ट अनुसार योजना को हैण्डओवर करने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि सभी ठेकेदार समय सीमा में कार्य पूर्ण करें और पूर्णता पर तत्काल अवगत कराएं। किसी भी प्रकार की लापरवाही पर सख्त कार्यवाही होगी। जिला कलेक्टर ने समूह जल प्रदाय योजना सिंघौरा 2, पवई व्यारमा, मझगांय और पवई की जानकारी लेकर डोर-टू-डोर सर्वे, कनेक्शन के संबंध में ग्रामीणों से जानकारी प्राप्त करने और मृदा परीक्षण के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए। कुछ ग्रामों में परियोजना के कार्यों में धीमी प्रगति के संबंध में नाराजगी जताई और टीम गठन कर जांच के निर्देश भी दिए। शून्य प्रगति वाले ठेकेदारों को ब्लैकलिस्ट कर ग्रामीणजनों को पेयजल के मूल अधिकार से वंचित करने के उल्लंघन पर एफआईआर दर्ज कराने के निर्देश भी दिए गए। उन्होंने कहा कि सभी ठेकेदार निर्धारित एग्रीमेंट की शर्तों के अनुरूप कार्य करें। इस दौरान पानी टंकी निर्माण, ओवरहेड टैंक, वितरण नेटवर्क की स्थिति की समीक्षा भी की गई। प्रत्येक ठेकेदार से अपूर्ण कार्यों की जानकारी भी ली गई व परियोजना लागत के संबंध में भी समीक्षा की गई। बैठक में अनुपस्थित कॉन्ट्रैक्टर को समिति की ओर से 5 हजार रूपए का जुर्माना अधिरोपित कर रोगी कल्याण समिति के खाते में जमा कराने के निर्देश भी दिए गए। जिला पंचायत सीईओ श्री संघ प्रिय भी उपस्थित थे।

घरेलू हिंसा नियंत्रण में कानूनी विसंगति

पिछले साल की बात है। किसी ने फेसबुक पर एक वीडियो साझा किया था... चलती सड़क, साइकिल, कारों, बसों की दौड़-भाग। आते-जाते लोग। अचानक घर से एक पतली-दुबली औरत निकलती है। उसने साड़ी पहन रखी है और सिर ढका हुआ है। उसके हाथ में एक पेड़ से तोड़ी हुई छड़ी है। तभी कैमरा एक बेहद बूढ़ी, कृशकाय, शरीर पर नाममात्र को सफेद धोती पहने एक दूसरी औरत पर फोकस करता है। छड़ी हाथ में पकड़े हुए औरत इस बूढ़ी स्त्री की तरफ बढ़ती है और हाथ पकड़कर इसे खींचने लगती है। जब यह स्त्री इधर-उधर होती है, तो वह इसे लगभग जमीन पर दे मारती है। फिर हाथ की छड़ी से इसे मारती ही जाती है। उसके बाद फिर से उसे घसीटती है और फिर जमीन पर पटकती है। फिर मारती है। बार-बार ऐसा होता ही जाता है। वह बूढ़ी औरत जोर-जोर से चिल्ला रही है। सड़क पर आने-जाने वाले उसे पिटते देख रहे हैं। अड़ोसी-पड़ोसी भी उसकी चीख-पुकार को सुन रहे होंगे, लेकिन कोई उसे बचाने नहीं आया। जिस तरह से उसे बार-बार जमीन पर पटका गया, छड़ी से तड़ातड़ पीटा गया इससे उसे कितनी चोट लगी होगी, इसे वीडियो देखकर महसूस किया जा सकता है।

मगर महिला आयोग, या मानवाधिकार आयोग की नजरों से शायद यह वीडियो नहीं गुजरा। नहीं पता कि कहां का था। देश के किस हिस्से में बनाया गया था, लेकिन इतना भयावह था कि रौंगटे खड़े हो जाते थे। एक युवा स्त्री एक बूढ़ी स्त्री को निर्ममता से पीट रही थी, लेकिन कानून शायद ही इस बूढ़ी स्त्री को बचाने आएगा। जेंडर से संबंधित कानूनों में सारे अपराध अक्सर युवा महिलाओं के प्रति होते ही मान लिए गए हैं। इसीलिए वहां बूढ़ों को न्याय देने की भी किसी को नहीं पड़ी। वैसे भी विदेशों में और अपने यहां भी कई नेता कहते ही रहते हैं कि बूढ़े अर्थव्यवस्था पर बोझ होते हैं, तब भला उनकी परवाह कोई क्यों करे। आपको दिल्ली की वह घटना भी याद होगी जहां अपनी बेटियां ही मां को मारती-पीटती थीं, भूखा रखती थीं। एक पड़ोसी ने इसका वीडियो बना लिया था। दिल्ली महिला आयोग ने इस स्त्री को बचाया था।

पिछले दिनों हरियाणा की एक महिला के बारे में खबर छपी थी। जहां उसने अपने पोते को सड़क पर घूमते देख बहू को समझाने की कोशिश की कि वह बच्चे को इस तरह सड़क पर अकेले न जाने दिया करे। इससे बहू भड़क उठी और उसने सास को इतना पीटा कि उसके कान का पर्दा फट गया और कई जगह की हड्डियां भी टूट गईं। घरों में वृद्ध स्त्री-पुरुषों के प्रति ऐसी घटनाएं इन दिनों आम हो चली हैं। लेकिन प्रकाश में बहुत कम आ पाती हैं क्योंकि कई बार लोग परिवार की प्रतिष्ठा की चिंता करके, पिटाई और तरह-तरह की हिंसा सहते रहते हैं, मगर मुंह नहीं खोलते। अगर बेटे या परिवार के अन्य सदस्य बचाने भी आएं तो भी बच नहीं पाते। इस तरह की घरेलू हिंसा झेलने को वे अभिशप्त हैं। वैसे तो अक्सर लोग किसी

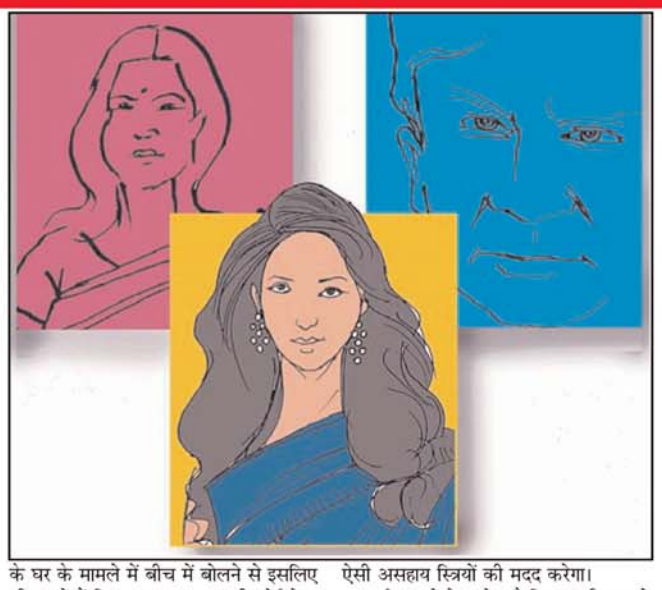

के घर के मामले में बीच में बोलने से इसलिए भी बचते हैं कि क्या पता उन पर ही कोई ऐसा आरोप लगा दिया जाए जिससे कि उनका बचना मुश्किल हो जाए। या कि किसी को बचाने जाएं और पुलिस कोर्ट-कचहरी के चक्कर में फंस जाएं। अपने यहां यदि इस तरह की हिंसा औरत ही औरत के ऊपर कर रही है तो उससे बचने का क्या उपाय है। कैसे कानून ऐसी असहाय स्त्रियों की मदद करेगा।

कई बार तो ऐसा होता है कि घर की बहू पूरे परिवार के खिलाफ घरेलू हिंसा का मामला दर्ज करा देती है। और पूरा परिवार कानून के शिकंजे में आ जाता है। लैंगिक कानूनों की हालत भी यह है कि एक बार किसी का नाम लगा भर दो, कि वह अपराधी साबित कर दिया जाता है। हाल ही में एक मामला कोर्ट में ऐसा ही आया था। इसमें एक महिला ने अपने सास, ससुर, देवर, देवरानी और ननद पर घरेलू हिंसा का मामला दर्ज कराया था। लेकिन कोर्ट में यह पूरा मामला ही गलत साबित हुआ। पता चला कि शिकायत दर्ज कराने वाली महिला जिस मकान में अपने पति के साथ रहती है, वह मकान उसके सास-ससुर का है, लेकिन वे किराए के घर में रहते हैं। अदालत ने कहा कि इस मामले को देखने से पता चलता है कि महिला घरेलू हिंसा से पीड़ित नहीं है। बल्कि जायदाद पर अधिकार करने के लिए वह इस कानून का सहारा ले रही है। जब सास-ससुर साथ रहते ही नहीं तो वे महिला को सता कैसे सकते हैं। जबकि इन बुजुर्गों को अपना ही घर छोड़कर किराए पर रहना पड़ रहा है। इसी मामले में 2016 में वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण व कल्याण अधिकरण ने महिला और उसके पति को मकान खाली करने का निर्देश दिया था। इसके अलावा सम्बंधित क्षेत्र के थानेदार को भी इन बुजुर्गों की सुरक्षा के लिए एक सिपाही की तैनाती की व्यवस्था करने को कहा गया था। तब शिकायत करने वाली महिला के पति ने अपने माता-पिता से माफी मांगी थी और समझौता कर लिया था। लेकिन जल्दी ही माता-पिता को फिर तंग किया जाने लगा। तब पूर्वी दिल्ली के डीएम ने चौबीस घंटे में मकान खाली करने के निर्देश दिए थे। लेकिन महिला द्वारा मकान खाली करना तो दूर, उलटे सास-ससुर तथा देवर, देवरानी पर घरेलू हिंसा का मामला दर्ज करा दिया । इसी कारण अदालत को यह कठोर टिप्पणी भी करनी पड़ी कि घरेलू हिंसा कानून का गलत इस्तेमाल हो रहा है। देखने की बात यह भी है कि यह मामला दिल्ली का था इसलिए त्वरित न्याय भी हुआ और प्रकाश में भी आया। जबकि पूरे देश में ऐसी बेशुमार घटनाएं होती होंगी, जिनकी चर्चा भी नहीं होती। यदि आने वाली खबरों को देखें तो पता चलता है कि आजकल महिला कानून जिनमें दहेज निरोधी अधिनियम के अंतर्गत आने वाली धारा 498 ए, घरेलू हिंसा और यौन प्रताड़ना, इनका बड़े पैमाने पर दुरुपयोग हो रहा है। जिन लोगों के खिलाफ इन कानूनों को आधार बनाकर शिकायतें की जाती हैं उनमें से अनेक शिकायतें झूठी पाई जाती हैं। लेकिन झूठी शिकायतें करने वाली स्त्रियों पर शायद ही कोई कठोर कार्रवाई होती है। इसीलिए ऐसे मामलों की बाढ़ आई रहती है। यदि झूठी शिकायतें करने वाली औरतों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए तो दूसरों का हौसला न बढ़े कि जब चाहो तब इन कानूनों का दुरुपयोग होने लगे। जो कानून सताई गई महिलाओं को न्याय देने के लिए बने हैं वे दूसरों को सताने लगें और जो इन कानूनों का दुरुपयोग कर रहे हैं उनका कुछ न बिगड़े। कायदे से तो ऐसी स्त्रियों-पुरुषों को कठोर दंड मिलना चाहिए जिससे कि दूसरों को भी सबक मिले। यदि कानून का दुरुपयोग होने लगे तो फिर उसे बने रहने का भी क्या औचित्य है। क्योंकि कानून का काम न्याय देने का होता है न कि अन्याय करना।

संपादकीय

नरोदा का नासूर

वर्ष 2002 में हुए गुजरात दंगों के दौरान अहमदाबाद के नरोदा गाम इलाके में हुए दंगों से जुड़े तमाम सवाल दो दशक के बाद भी अनुत्तरित ही हैं। इस रक्तरंजित हत्याकांड में ग्यारह लोगों की मौत हुई थी। हाल ही में अहमदाबाद की विशेष अदालत ने सभी शेष 67 आरोपियों को बरी कर दिया। इस दंगे के मामले में सवालों के घेरे में गुजरात की पूर्व मंत्री माया कोडनानी व बजरंग दल के पूर्व नेता बाबू बजरंगी भी शामिल रहे हैं। उल्लेखनीय है कि इस मामले में कुल 86 आरोपियों में से 18 की मुकदमे के दौरान ही मौत हो गई थी। निश्चित रूप से यह फैसला इस बात को रेखांकित करता है कि इस मामले में जांच का स्तर नीचा रहा, आधी-अधूरी चार्जशीट दाखिल की गई और कमजोर तर्कों से केस आगे बढ़ाया गया। निस्संदेह इन आरोपियों को अपर्याप्त साक्ष्य के चलते अदालत ने आरोप मुक्त किया है। उल्लेखनीय है कि नरोदा गाम संहार वर्ष 2002 के नौ प्रमुख सांप्रदायिक दंगों में से एक था। जिसकी जांच सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर एक एसआईटी ने की थी। कालांतर इस मामले की सुनवाई एक विशेष अदालत ने की थी। दरअसल, 27 फरवरी, 2002 को गोधरा में ट्रेन में आगजनी हुई थी। उसके उपरांत पूरे राज्य में दंगे भड़क उठे थे। वास्तव में ट्रेन में जलकर मरने वालों में 58 यात्री थे, जिनमें अधिकांश अयोध्या से लौट रहे तीर्थयात्री थे। उल्लेखनीय है कि इसी साल जनवरी में भी गुजरात की एक अदालत ने सभी 22 अभियुक्तों को बरी कर दिया था। दरअसल, सुनवाई के दौरान आठ आरोपियों की मौत हो गई थी। यहां भी सबूतों के अभाव में आरोपियों के बरी होने की बात कही गई। कहा जाता है कि वर्ष 2002 में हुए दंगों को स्वतंत्र भारत में हुए सबसे भीषण दंगों के रूप में देखा जाता है। लेकिन हाल के फैसलों में अभियुक्तों का बरी होना दशकों से न्याय की प्रतीक्षा कर रहे लोगों के लिये झटका जैसा ही रहा। पीड़ित पक्ष के लोग आरोपियों को दी गई राहत पर सवाल उठाते रहे हैं। इससे पहले भी नरोदा पाटिया दंगे मामलों में गुजरात सरकार की पूर्व मंत्री माया कोडनानी को बड़ी सजा सुनाई गई थी। कालांतर गुजरात उच्च न्यायालय से उन्हें राहत मिल गयी थी। वहीं अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों में बिलकिस बानो केस में जेल में सजा काट रहे अभियुक्तों की जल्दी रिहाई को लेकर भी आक्रोश देखा गया। पीड़ित पक्ष के लोग न्याय की गुणवत्ता को लेकर सवाल उठाते रहे हैं। विडंबना ही है कि हमेशा से ही सांप्रदायिक दंगों में ऐसे लोगों को सब कुछ गंवाना पड़ता है, जिनका ऐसे मामलों से दूर-दूर तक का वास्ता नहीं होता। इस अन्याय से मुक्ति की आस में वे न्याय व्यवस्था की ओर उम्मीद से देखते हैं। लेकिन जब उन्हें वहां से भी न्याय नहीं मिलता तो निश्चित रूप से दुख व आक्रोश उन्हें निराशा व अवसाद के दलदल में धकेल देता है। नीति-नियंताओं को जनाक्रोश को देखते हुए न्याय के तकाजे को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए।

सांस्कृतिक कूटनीति

जी-20 देशों के रूस व यूक्रेन युद्ध के साये में हुए विदेश मंत्रियों के हालिया दिल्ली सम्मेलन से कुछ निर्णायक हासिल होने की उम्मीद पहले भी नहीं थी। लेकिन इसके बावजूद संवाद के लिये बेहतर मंच जरूर मिला। हालांकि, यूक्रेन इस बैठक से बहुत उम्मीद लगाये हुए था लेकिन पश्चिमी देशों के अड़ियल नजरिये के चलते ऐसी संभावना नहीं बनी। फिर भी अमेरिका व रूस के विदेश मंत्रियों का एक मंच पर आना महत्वपूर्ण जरूर कहा जा सकता है। भारत ने स्पष्ट किया कि दूसरे विश्वयुद्ध के बाद दुनिया में शांति व विकास के लिये जो ढांचा बना था, वह कारगर सिद्ध नहीं हो पाया है। प्रधानमंत्री का इशारा संयुक्त राष्ट्र की कार्यशैली और स्थायी सदस्य देशों की मनमानी की तरफ था। कहा जा सकता है कि इस सम्मेलन के दौरान कई देशों के बीच द्विपक्षीय वार्ताएं सार्थक रही। भारत ने अमेरिकी विदेशमंत्री से बातचीत में आर्थिक व सामरिक मसलों को विस्तार दिया। इसके अलावा रूस-यूक्रेन युद्ध, हिंद प्रशांत क्षेत्र की चुनौतियों व सामरिक महत्व की चर्चा विदेश मंत्री जयशंकर व बिल्कंन के बीच हुई। मानवाधिकारों व अन्य मुद्दों पर भारत को घेरने की कोशिशों को नकार कर अमेरिका ने अहसास कराया कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र व आर्थिक शक्ति के रूप में उभरते भारत के हितों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अमेरिका ने भारत को एक बड़े आर्थिक व सामरिक सहयोगी के रूप में स्वीकारा है। अमेरिका व रूस को एक मंच पर साधना भारत की बड़ी कूटनीतिक कामयाबी ही कही जाएगी। वहीं दूसरी ओर जी-20 सम्मेलन में भले ही गतिरोध के चलते यूक्रेन मुद्दे पर साझा बयान की कोशिश सिरे न चढ़ पायी हो, लेकिन दुनिया के देश भारत आकर यहां की सांस्कृतिक विविधता और जनजीवन से रूबरू जरूर हुए। उल्लेखनीय है कि जी-20 का मकसद जलवायु परिवर्तन, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, खेती, खाद्य सुरक्षा, पोषण, भ्रष्टाचार, प्रवास, आतंकवाद व नशीले पदार्थों की तस्करी जैसे मुद्दों के समाधान की कोशिश करना रहा है। इन संगठनों की बैठकें लगातार चल रही हैं।

दिल-दिमाग में साम्य से शिखर की कामयाबी

हर व्यक्ति में कोई न कोई हुनर अवश्य होता है। अगर उसी हुनर को रोजी-रोटी में बदल दिया जाता तो अपरीमित सफलता प्राप्त होती है। हालांकि हुनर को रोजी-रोटी में बदलते हुए लोग डरते हैं कि कहीं सफल नहीं हुए तो परिवार कैसे चलेगा? 'द काइजेन' पुस्तक के लेखक रॉबर्ट माउरेर का कहना है कि, 'मस्तिष्क को इस तरह बनाया गया है कि कोई भी नई चुनौती, अवसर या इच्छा किसी न किसी तरह के डर को प्रेरित कर देती है।' इसलिए यह डर होना लाजिमी है, लेकिन उस डर से बाहर आने का सामना व्यक्ति तभी कर सकता है, जब वह चुनौतियों से लड़ता है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए चुनौतियों को पार करना ही पड़ता है। चुनौतियां जीवन का एक अभिन्न हिस्सा हैं। वह व्यक्ति खुशकिस्मत होता है, जिसके जीवन में चुनौतियों का भंडार होता है और वह व्यक्ति सफलता का राजा बन जाता है जो चुनौतियों को सूझबूझ के साथ अवसर में बदल लेता है। गुलशन नंदा से हर गंभीर पाठक परिचित है।

बहुत पहले दिल्ली के चांदनी चौक के पास न्यू देहली ऑप्टिकल्स नाम से एक चश्मे की दुकान हुआ करती थी। 1950 के दशक में गुलशन नंदा इसी दुकान में काम करते थे। लेकिन यह नौकरी उनके मन के मुताबिक नहीं थी। उनका मन तो लिखने में रमता था, पर लेखन के भरोसे भला नौकरी कैसे छोड़ देते? यही कशमकश उन्हें आगे बढ़ने से रोके रखती थी। चश्मे की दुकान में काम करने से मिलने वाले रुपयों से परिवार की गुजर-बसर बमुश्किल होती थी, ऐसे में अगर उसे भी छोड़ देते तो उनके परिवार की नैया कैसे पार होती? उनकी जिंदगी में कोई उत्साह नहीं था। बस रोज सुबह दुकान पर आते और शाम ढलते घर चल देते। दिन इसी तरह बीत रहे थे।

एक दिन गुलशन नंदा बस में सफर कर रहे थे। उनके साथ एक सहयात्री बैठे थे। बातचीत में सहयात्री और वे अपने मन की व्यथा एक-दूसरे से कह बैठे। गुलशन नंदा की व्यथा सुनकर सहयात्री बोले, 'तुम्हें लिखना शुरू करना चाहिए। दम होगा तो वह छपेगा और उसे पाठकों का प्यार भी मिलेगा। हर काम में चुनौतियों से तो जूझना ही पड़ता है। क्या

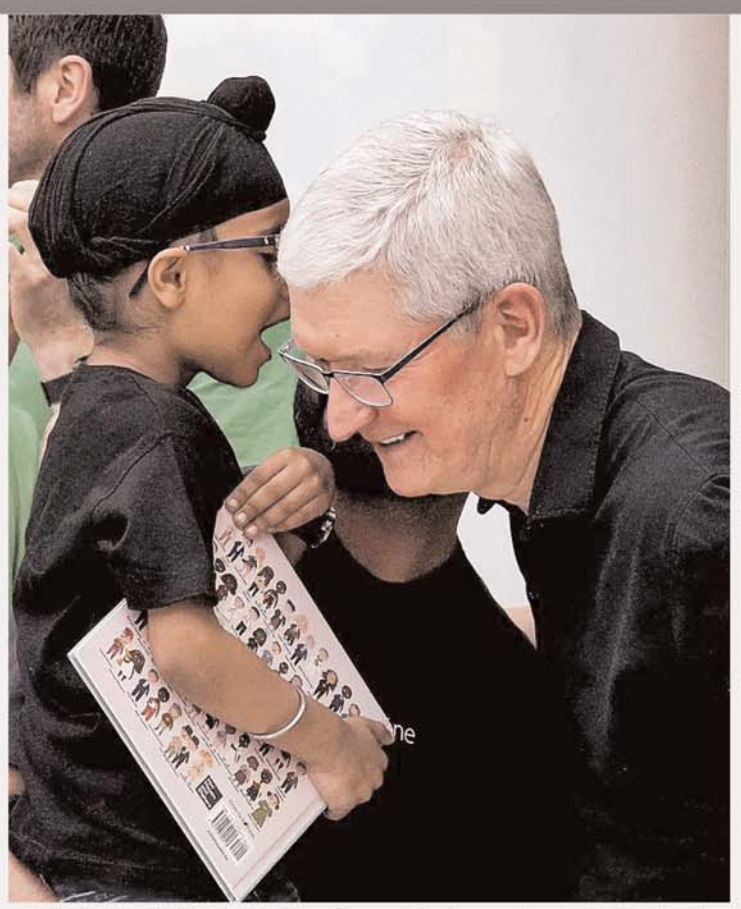

नौकरी में कम जूझ रहे हो? अगर लेखन में जूझोगे तो कम से कम मन को राहत तो मिलेगी।' सहयात्री की इन बातों ने गुलशन नंदा के लिए संजीवनी का काम किया। इसके बाद उन्होंने लुगदी साहित्य के संसार में दस्तक दे दी। नौकरी छोड़ दी और स्वयं को पूरी तरह लेखन के लिए समर्पित कर दिया। नौकरी छोड़ने के बाद जो हुआ, उससे भला कौन अनभिज्ञ है?गुलशन नंदा के साहित्य के क्षेत्र में दस्तक देने की देर थी कि उन्हें हाथों-हाथ लिया गया। वर्ष 1960 से 1970 के दशक में उन्होंने पॉकेट बुक्स को जिन ऊंचाइयों पर पहुंचाया, उसे कोई दूसरा लेखक छू भी न सका। कहावत की तरह यह बात कही जाती है कि, 'अगर नंदा जी को पहले नम्बर पर रखा जाए तो आगे की नौ जगह खाली दिखाई देना लाजिमी थी। लिहाजा उनके बाद कोई नाम काबिलेजिक्र होगा तो 11वें नम्बर पर होगा।'

जब उनके उपन्यासों ने तहलका मचाना शुरू कर दिया तो उन्होंने मुंबई की ओर रुख किया। वहां उन्होंने फिल्मी लेखन में हाथ आजमाया और दो दर्जन से अधिक सफल फिल्मों की कहानियां लिखीं। फिल्मफेयर अवॉर्ड के 'बेस्ट स्टोरी' वर्ग में उनका कई बार नामांकन हुआ। इनमें 'काजल', 'नीलकमल', 'खिलौना', 'कटी पतंग' और 'नया ज़माना' फिल्म प्रमुख हैं। सभी प्रकाशक नंदा जी को छापने के लिए होड़ में लगे थे। लेकिन नंदा साल में केवल एक उपन्यास लिखते थे। ऐसे में उनके ऊपर 'एक अनार सौ बीमार' वाली कहावत चरितार्थ होती थी। जब वे दिल्ली आते थे तो प्रकाशक अटैची में रुपये भरकर उनके पास लाते थे और उनके मना करते-करते भी छोड़ जाते थे। ऐसी थी गुलशन नंदा की सफलता। एक ऐसे व्यक्ति की सफलता जो अगर चुनौतियों का सामना करने का साहस न जुटाते तो शायद सारी जिंदगी एक चश्मे की दुकान पर गुमनामी में बिता देते। अब वह चश्मे की दुकान चांदनी चौक में नहीं है। लेकिन पूरा चांदनी चौक गुलशन नंदा से भली-भांति परिचित है। जब गुलशन नंदा से उनकी आश्चर्यजनक कामयाबी का रहस्य पूछा जाता था तो वे मुस्करा कर अपने मस्तिष्क की ओर इशारा करते हुए कहते थे, 'मैंने अपने हृदय की सुनकर मस्तिष्क का उपयोग किया और सफलता तक पहुंच गया। मैं आज भी अपने उस सहयात्री को नहीं भूला जिसके कारण मेरे मस्तिष्क ने मुझे लेखन की ओर प्रेरित किया।' जॉर्ज ल्यूकास का कहना है कि, 'ईश्वर ने हमें एक मस्तिष्क दिया है और यह हमें बचाने वाली एकमात्र चीज़ है। सभी जीवों के पास कोई न कोई लाभ, चालाकी, पंजे, छल, ज़हर, गति या कोई न कोई चीज़ होती है, जिससे उन्हें बचे रहने में मदद मिलती है। हमारे पास सिर्फ मस्तिष्क है। इसलिए अपने मस्तिष्क का इस्तेमाल करना हमारा कर्तव्य है।

विकास की विसंगति से उपजी बदहाली

कुछ ही अर्सा पहले एक अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान ने घोषणा की थी कि भारत शीघ्र ही विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक ताकतों में शुमार हो जायेगा। भारत सरकार के समर्थकों और प्रशंसकों ने इस घोषणा का स्वागत किया था। फिर एक और अंतर्राष्ट्रीय संस्थान ने भारत की सोलह प्रतिशत आबादी के गरीब होने की घोषणा कर दी। फिर एक और ऐसा ही वक्तव्य आया, जिसमें भूख के सूचकांक के संदर्भ में 121 देशों में भारत का स्थान 107वां बताया गया था। यह बात उनको रास नहीं आयी जिन्होंने भारत के आर्थिक ताकत बनने की घोषणा का स्वागत किया था। कहा गया कि इस तरह की बातें करके कुछ तथाकथित वैश्विक संस्थान हमारे भारत की बदनामी करना चाहते हैं। यह तो संभव है कि किसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थान का कोई आकलन ग़लत हो, यह भी संभव है कि कोई संस्थान हमारे देश को बदनाम करना चाहता हो, लेकिन 'कड़वा-कड़वा थू और मीठा-मीठा गप' वाली बात नहीं होनी चाहिए। भारत के आर्थिक शक्ति बनने की बात कहने वाली संस्था और भारत की जनता की भूख के आंकड़े देने वाली संस्था, दोनों, विश्व की भरोसेमंद संस्थाएं मानी जाती हैं। हमें ऐसी घोषणाएं करने वालों की नीयत पर शक करने के बजाय इन घोषणाओं से कुछ सीखने की आवश्यकता है। अर्थात्? यह कि ये आंकड़े हमें सावधान भी करते हैं और अपनी स्थिति सुधारने की प्रेरणा भी देते हैं। गरीबी के आंकड़ों की बात ही कर लें। हमें अच्छा नहीं लगता जब कोई कहता है कि आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाने के बाद भी हमारे देश में गरीबों की अच्छी-खासी संख्या है; गरीबी यानी वे जो दो वक्त की रोटी नहीं जुटा पाते। अच्छा है कि हमें यह बात अच्छी नहीं लगती, पीड़ा होती है हमें, होनी भी चाहिए। पर ऐसी बात बताने वाले की नीयत पर शक करने की बजाय हमें सोचना यह चाहिए कि ऐसी स्थिति क्यों है, और कैसे बदल सकते हैं हम इस स्थिति को? यह तभी संभव है जब हम पहले वस्तुस्थिति को स्वीकार करें। वस्तुस्थिति यह है कि देश की अस्सी करोड़ जनता आज भी भूखी है और हमारी सरकार को उसे मुफ्त खाद्यान्न देना पड़ रहा है। पिछले तीन साल से ये भारतीय सरकारी मदद पर आश्रित होकर जीवन जी रहे हैं। अस्सी करोड़ भारतीयों को मुफ्त खाद्यान्न देने की इस बात को हमारी सरकार अपनी उपलब्धि मानती है। यह उपलब्धि नहीं, एक विवशता है और शर्मनाक स्थिति है यह। हमें इस बात पर शर्म आनी चाहिए कि देश की इतनी बड़ी आबादी अपनी ज़रूरत का खाद्यान्न अपनी कमाई से जुटाने की स्थिति में नहीं है। हकीकत यह है कि प्रति व्यक्ति आय, बेरोज़गारी, भोजन की उपलब्धि, आवास, सफाई आदि के मानकों को देखते हुए देश की लगभग एक-चौथाई आबादी आज गरीबी का जीवन जी रही है। हाल ही में देश का वार्षिक बजट पेश किया गया था। एक जाने-माने अर्थशास्त्री के अनुसार अपने बजट भाषण में वित्तमंत्री ने सिर्फ दो बार 'गरीब' शब्द का इस्तेमाल किया है! क्या यह स्थिति उस शुतुरमुर्ग वाली बात याद नहीं दिलाती जो रेत में अपना सिर गढ़ा कर यह मान लेता है कि खतरा है ही नहीं? खतरा हमारे सिर पर मंडरा रहा है। उसकी अनदेखी करके नहीं, उसका मुकाबला करके ही स्थिति सुधारी जा सकती है। यह मुकाबला जानने के पहले हमें जानना होगा कि स्थिति है क्या? स्थिति यह है कि देश का गरीब और गरीब होता जा रहा है और अमीर और अमीर। देश की कुल संपत्ति का साठ प्रतिशत आज पांच प्रतिशत आबादी के पास है। निचली पचास प्रतिशत आबादी के पास देश की कुल तीन प्रतिशत संपदा है। आर्थिक विषमता की यह खाई विकास के हमारे सारे दावों को अंगूठा दिखा रही है। पिछले 75 सालों में विकास हुआ है, इसमें कोई संदेह नहीं है, पर इस विकास की गति धीमी भी है और यह विकास नितांत अपर्याप्त भी है। आंकड़े बता रहे हैं कि आज हमारे देश में 43 करोड़ श्रमिक हैं, इनमें आधे से भी कम लोगों के पास रोज़गार है। जहां तक स्वास्थ्य का सवाल है, देश की आधी से अधिक महिलाओं के शरीर में खून की कमी है। छह महीने से लेकर 23 माह के बच्चों में से सिर्फ ग्यारह प्रतिशत बच्चों को ही पूरा भोजन मिल रहा है। देश के लगभग एक-तिहाई बच्चे अपर्याप्त वजन वाले हैं। सरकार दावे कर रही है कि हर घर में नल पहुंचा दिया गया है, शौचालय बना दिये गये हैं, हर गांव में स्कूल बन गये हैं, प्राथमिक से लेकर उच्चतम स्तर तक की शिक्षा-व्यवस्था हो चुकी है। पर हकीकत क्या है? आज देश के स्कूलों की स्थिति यह है कि सवा लाख से अधिक स्कूलों में सिर्फ एक अध्यापक पहली से पांचवीं तक के बच्चों को पढ़ा रहा है और आईआईटी जैसे उच्च संस्थानों की स्थिति यह है कि वहां पर्याप्त अध्यापक नहीं हैं- 8153 स्वीकृत स्थानों में 3253 स्थान रिक्त पड़े हैं यानी पर्याप्त पढ़ाने वाले ही नहीं हैं। नये-नये आईआईटी और आईआईएम बनाये जाने की घोषणाएं तो हो रही हैं, पर हकीकत यह है कुछ ही अर्सा पहले तमिलनाडु में एक 'एम्स' बना दिये जाने की घोषणा हुई थी। विधानसभा में घोषणा तो हो गयी पर अभी 'एम्स' की चारदीवारी भी नहीं बनी थी! कथनी और करनी का यह अंतर कब मिटेगा? दिसंबर-2022 में देश में बेरोज़गारी की दर आठ प्रतिशत थी; शहरी भारत में 10.09 प्रतिशत और ग्रामीण भारत में 8.3 प्रतिशत। प्रतिशत में बात पूरी समझ नहीं आती। सीएमआईई के अनुसार हमारे भारत में आज 5.3 करोड़ लोगों के पास रोज़गार नहीं है। इनमें से 3.5 करोड़ लोग लगातार काम खोज रहे हैं। डेढ़ करोड़ से अधिक लोग ऐसे हैं जो काम करना तो चाहते हैं, पर एक्टिव होकर काम की तलाश नहीं कर रहे अर्थात्? वे लोग बुरी तरह निराश हो चुके हैं।यह निराशा किसी एक क्षेत्र में नहीं है। स्थिति गंभीर है। इस गंभीरता को समझा जाना ज़रूरी है। सवाल बेरोज़गारी का हो या महंगाई का; स्वास्थ्य का हो या पढ़ाई का, उत्तर स्थिति की गंभीरता को समझकर ईमानदार कोशिश में ही निहित है। जुमले उछालने से बात नहीं बनेगी। आज हम दुनियाभर के उद्योगों को भारत आने का निमंत्रण दे रहे हैं, उद्योगों के आने की घोषणाएं भी हो रही हैं। अच्छी बात है यह। पर क्या यह भी एक हकीकत नहीं है कि पिछले आठ सालों में हर साल औसतन एक लाख से अधिक भारतीय देश छोड़कर कर चले गये हैं? ये काम की तलाश वाले नहीं हैं, पढ़े-लिखे योग्य लोग हैं जिन्हें विदेश अपने देश से ज़्यादा प्यारा लग रहा है। आखिर क्यों? कौन देगा उत्तर इस 'क्यों' का?

मालनपुर नगर परिषद प्रांगण में माकापा का धरना जारी

अनिश्चित काल के लिए प्रारंभ सी एम ओ का नहीं माना आश्वासन

पुष्पांजली टूडे संवाददाता मालनपुर
पहलवान सिंह राजावत

मालनपुर। नगर परिषद मालनपुर की नाकामयाबी के खिलाफ मा का पा का डेरा डालो घेरा डालो धरना नगर परिषद में 24 अप्रैल से अनिश्चित कालीन समय जब तक 16 सूत्रीय मांगे स्थानीय जनता की पूरी नहीं होगी धरना प्रदर्शन जारी रहेगा मालनपुर नगर परिषद प्रांगण में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी क्षेत्रीय कमेटी सचिव वीरेंद्र सिंह कुशवाहा धरने पर बैठे और उन्होंने कहा कि जब तक हमारे क्षेत्र की बुनियादी समस्याओं का हल नहीं होगा तब तक यह धरना पार्टी के तत्वाधान में चलेगा हमारे जिला व प्रांतीय नेता भी आएंगे एवं वरिष्ठ मजदूर नेता सीटू जिला उपाध्यक्ष देवेंद्र कुमार शर्मा व हरगोविंद जाटव ने धरना प्रदर्शन करते हुए कहा कि मालनपुर नगर परिषद में सीएमओ दो-तीन माह से मेहगांव बैठते हैं इस वजह से जरूरतमंदों के कार्य नामांतरण लाडली बहना योजना के लिए केवाईसी आम जनता के कार्य लंबित पड़े हुए हैं मालनपुर में शासकीय स्वास्थ्य केंद्र जहां एक डॉक्टर के सहारे करीबन 11 माह से चल रहा है रात्रि में कोई डॉक्टर नहीं रहता यहां एक महिला चिकित्सक की अत्यंत आवश्यकता है जिससे प्रसूता महिलाएं जो पास के जिला मुरैना के अंतिम छोर पर रह रहे ग्रामीणों प्रसूता महिलाएं रात्रि में आती हैं उन्हें सीधा ग्वालियर जाना पड़ता है मालनपुर

अस्पताल 24 घंटे एक चिकित्सक रहना चाहिए सीएसआर के तहत डॉ सोप से हरि रामपुरा के रेवासियों को पेयजल व्यवस्था कराई जाए क्षेत्र के उघोगो में जिन किसानों की जमीन गई उन परिवार को उद्योग इकाई में रोजगार दिया जाए चोक पड़े नालों की सफाई कराई जानी चाहिए हमारी पार्टी ने कई बार इस मांग को उठाया है परंतु स्थानीय समस्याओं का हल आज तक नहीं हूआ जब तक हमारी मांगों पर ठोस कदम नहीं उठाया जाएगा आंदोलन अनिश्चितकाल तक चलेगा नगर परिषद प्रांगण में निरंतर 15-20 पार्टी के कर्मठ कार्यकर्ताओं महिलाओं के साथ इस भयंकर गर्मी में बैठे हैं तो वरिष्ठ भाजपा नेता लक्ष्मी नारायण शर्मा एवं नगर परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि मुकेश किरार उनकी समस्याएं सुन उनके पीने के लिए ठंडे पानी की व्यवस्था की अध्यक्ष प्रतिनिधि एवं नगर परिषद सीएमओ मनोज शर्मा ने आधा घंटे बैठकर माकपा नेताओं से बात की और आश्वासन दिया कि हमारे लायक जो भी काम होगा उसे हम हल करने के लिए तैयार हैं वेसे राज्य शासन के लिए आपका मांग पत्र भेजेंगे जैसा आदेश होगा नियमित रूप से समस्याएं हलकी जायेगी इस पर भी धरना समाप्त नहीं हुआ जो 24 अप्रैल से डेरा डालो घेरा डालो आंदोलन बंद नहीं हुआ आज धरने पर बैठे राजेंद्र सिंह कुशवाह, डी के शर्मा, हरगोविंद जाटव रामा बाई कुशवाह अलका बाई अनीता गोस्वामी, रघुवीर जाटव, रामगोपाल बाल्मीक, श्रीलाल माहौर, हीरालाल, लायक राम कुशवाह, नारायण शर्मा, भारती देवी, विमला कुशवाहा, गब्बर सिंह कुशवाहा, पार्वती देवी, मुन्नी देवी, वीरेंद्र सिंह कुशवाह, सतीश शर्मा, लक्ष्मण सिंह कुशवाह, सीमा तोमर, समीना खान, सुनील सिंह, आदि लोग मौजूद रहे।

मारूति मेडिकल द्वारा जागो मतदाता जागो कार्यक्रम का हुआ आयोजन

पुष्पाजंली टुडे

बेंगलुरू। मारुति मेडिकल्स द्वारा मतदान के प्रति जागरूकता हेतु जागो मतदाता जागो कार्यक्रम के तहत महेंद्र मुणोत ने विधानसभा के सामने अपने संबोधन में कहा 10 मई 2023 को कर्नाटका विधानसभा चुनाव के दिन अपने घरों से बाहर निकले मतदान बूथ तक जाएं एवं राष्ट्रहित में मतदान अवश्य करें औरों को भी प्रेरित करें एवं राष्ट्र के लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करें ।

खरगोन जिले के ग्राम बरूड़ थाना पुलिस द्वारा हत्या के आरोपी को गुजरात प्रदेश के राजकोट से किया गया गिरफ्तार

खरगोन जिले से मुन्ना खान पुष्पांजली टुडे

बरूड़ थाना क्षेत्र के ग्राम सिनखेडा गिट्टी खदान पर महिला की हत्या अवैध संबंधों को लेकर की हत्या आरोपी फरार हो गया था फरार आरोपी पुना पिता गिलदार घटना स्थल से फरार हो गया था जिसको लेकर बरूड़ थाना प्रभारी लक्ष्मन सिंह लौवंशी उनकी पुलिस टिम लगातार आरोपी को तलाश में जुट गई लगातार थाना प्रभारी लक्ष्मन सिंह लौवंशी उनकी पुलिस टिम आरोपी की तलाश में लगातार प्रयास करती रही पुलिस को सुचना मिली की आरोपी गुजरात गया है जिसके निशान देही थाना प्रभारी लक्ष्मन सिंह लौवंशी द्वारा अपनी पुलिस टिम का गठन किया गया उस टिम में थाना प्रभारी लक्ष्मन सिंह लौवंशी सब इंस्पेक्टर राकेश सिसोदिया आरक्षक राजेश पाटिल सब इंस्पेक्टर राकेश सिसोदिया आरक्षक गठित टिम द्वारा हत्या करने वाले आरोपी की तलाश में गुजरात प्रदेश के राजकोट से गिरफ्तार किया गया है दिनांक 20/4/2023 घटित घटना में अपराध कृमांक 102/23 धारा 302 भादंवि में फरार आरोपी पुना पिता गिलदार निवासी बिस्टान को बरूड़ थाना प्रभारी लक्ष्मन सिंह लौवंशी नेतृत्व में गठित टिम में सब इंस्पेक्टर राकेश सिसोदिया आरक्षक राजेश पाटिल।

वोटर्स पर पकड़ बनाने जनसंपर्क कर रहे हैं युवा नेता रामशेष बघेल

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । कांग्रेस पिछड़ा वर्ग समन्वय प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष रामशेष बघेल आगामी विधानसभा चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी के तौर पर मेहगांव से चुनाव लड़ सकते हैं जो इन दिनों वोटरों पर पकड़ बनाने के लिए जमकर पसीना बहा रहे हैं, यह बता दें कि रामशेष बघेल 2005 से समाज सेवा एवं सक्रिय राजनीति के जरिए आमजन के दिलों में काफी अच्छी छवि बना रखी है कई बड़े ओबीसी बघेल समाज के आयोजन करवाएं भिंड जिले के ग्राम भगवासी तहसील अटेर से ताल्लुक रखने वाले रामशेष बघेल मेहगांव से चुनाव लड़ने के इच्छुक है, जो लगातार क्षेत्र में सक्रिय बने हुए है उनके व्यवहार कुशलता के चलते स्थानीय नागरिकों द्वारा उन पर काफी भरोसा जताया जा रहा है। अधिकांश राजनेताओं को व्यस्तता के चलते आमजन के सुख-दुख से कोई सरोकार नहीं रह जाता है जबकि रामशेष बघेल एसे युवा नेता है जो तमाम व्यवतता के होने के बावजूद स्थानीय नागरिकों के सुख दुख में सदैव साथ खड़े रहते हैं उनकी इस कार्यशैली से स्थानीय लोग भी उन्हें अपने परिवार के सदस्य की तरह ही सम्मान देने लगे है। कांग्रेस नेता रामशेष बघेल का कहना है कि मूलतः भिंड जिले से जुड़े होने से क्षेत्र की उपेक्षा देख आत्मग्लानि महसूस होती है इसलिए अब हम मेहगांव से ही चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे हैं जिससे क्षेत्र को विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जा सके ।

मेहंगाव विधानसभा क्षेत्र के सभी गांवों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ा जाएगा : ओपीएस भदौरिया

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता मध्य प्रदेश सरकार में नगरीय प्रशासन एवं आवास राज्यमंत्री मेहगांव विधानसभा क्षेत्र से विधायक ओपीएस भदौरिया ने अपने जनसंपर्क कार्यक्रम के तहत अंबेडकर आश्रम के लिए 15 15 लाख की लागत से बाउंड्री वॉल निर्माण एवं पेपर ब्लॉक शिलान्यास किया। इस अवसर पर राज्यमंत्री श्री भदौरिया ने कहा ने कहां की भारतीय जनता पार्टी की सरकार दलित हितैषी सरकार है जिन्होंने गरीब कल्याण के लिए अनेकों योजनाओं को संचालित करते हुए हर व्यक्ति को आत्मनिर्भर विकास की मुख्यधारा से जोड़ा है उन्होंने यह साबित कर दिया कि वे दलित हितैषी नेता है सर्व समाज को साथ लेकर चलने भारतीय जनता पार्टी की सरकार अंतोदय और डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की विचारधारा को लेकर काम करती है। उन्होंने मेहगांव विधानसभा में दलित समाज का मान और सम्मान बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा से अनुसूचित जाति समाज को विकास की मुख्यधारा से दूर रखा उनके वोटों पर राजनीत करते रहे आज वह दलित जैसी बन रहे हैं, अनुसूचित जाति समाज समझ चुका है की हमारे विकास की चिंता करने वाली एक ही राजनीतिक दल है वह है भारतीय जनता पार्टी केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और प्रदेश में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान। उन्होंने बाउंड्री वाल शिलान्यास शिला का पूजन करते हुए यह सौगात समाज को समर्पित की इस अवसर पर उन्होंने सभी का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए विकास कार्य को आगे बढ़ाने के लिए जनता को संकल्पित किया। राज्यमंत्री श्री भदौरिया विधानसभा क्षेत्र के ग्राम करकेपुरा में भोम सिंह बघेल के चाचा जी त्रयोदशी मैं पहुंचकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित कर शोक संवेदना व्यक्त की। इस अवसर पर पार्टी कार्यकर्ता एवं ग्रामीण जन काफी संख्या में मौजूद थे।

ऑनलाइन सेल्स मैन मोबाइल देने वाला बगैर रसीद के मोबाइल बेचते पकड़ा एक लाख से अधिक कीमत के मोबाइल बरामद

पुष्पांजली टूडे संवाददाता मालनपुर
पहलवान सिंह राजावत

भिंड। पुलिस अधीक्षक शैलेंद्र सिंह चौहान द्वारा जिले में चोरी लूट, डकैती आरोपी गणों गिरफ्तारी हेतु दिशा निर्देश में चलाए जा रहे धरपकड़ अभियान में अतिपुलिस अधीक्षक कमलेश कुमार खरपूशे एवं एस डी ओ पी सौरभ कुमार के मार्गदर्शन में मालनपुर थाना प्रभारी जितेंद्र सिंह मावई ने 719 हाईवे वसुंधरा फैक्ट्री के सामने से बगैर बिल के मोबाइल बेचने वाले युवक को मोबाइल सहित पकड़ा उद्योग क्षेत्र मालनपुर में 24 अप्रैल को मुखबिर की सूचना के आधार पर मालनपुर थाना पुलिस ने नेशनल हाईवे के किनारे वसुंधरा पोली फाइबर कंपनी के सामने एक व्यक्ति मोबाइल बेचने की नियत से खड़ा था मालनपुर थाना पुलिस को देख भागने लगा पुलिस ने पकड़ कर जब युवक के बैग की तलाशी ली तो उसके थैले से 3 मोबाइल मिले रियलमी, आइटल, पोगो, बगैर बिल के जप्त किए पुलिस द्वारा आरोपी से हिम्मत अमली से पूछताछ कर धारा 27 विधान मेमोरण्डम लिया तो उसके घर से चोरी के रियलमी कंपनी के 5 सैमसंग गैलेक्सी कंपनी के दो मोबाइल ऐसे पुल 10 मोबाइल जिसकी कीमत ड़1 लाख दस हजार जप्त कर लिए गए यह युवक ऑनलाइन खरीदारी कर घर-घर डिलीवरी देने का काम करता था जो मोबाइल वापस जाते थे उनमें से गोदाम से एक, एक कर एकत्रित कर बगैर रसीद के बेचने काम करता था थाना मालनपुर अपराध क्रमांक 74/2023 धारा 411, 414 भादवि कायम कर विवेचना में लिया गया। उक्त कार्रवाई में निरीक्षक जितेंद्र सिंह मावई थाना प्रभारी मालनपुर, उपनिरीक्षक बलवंत सिंह यादव, प्रधान आरक्षक कमल माहौर, आरक्षक नवीन तोमर, आरक्षक पंकज तोमर, आरक्षक रामबरन सिंह, आरक्षक सरस्वती, चालक रामानंद यादव, की सराहनीय योगदान रहा।

यशवन्त राव वाघ स्मृति जिला स्तरीय लॉन टेनिस प्रतियोगिता, स्थानीय लाइन खेल परिसर में सम्पन्न हुई

खरगोन जिले से मुन्ना खान पुष्पांजली टुडे

जिला टेनिस एसोसिएशन व पारस टेनिस एकेडमी के सयुंक्त तत्वाधान में आयेजित इस प्रतियोगिता में जूनियर व सब जूनियर वर्ग की गर्ल्स व बॉयज की प्रतियोगिता में ऋग्वेद मालसे, वेदिका जैन व वैदेही किरावत व काव्या महाजन ने अपने वर्ग में विजेता होने का गौरव प्राप्त किया। अर्णव मंडलोई, श्रेया अग्रवाल अंजली जोशी, यथार्थ सिंह ने उपविजेता बनने का गौरव प्राप्त किया सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया स्वल्पाहार भी कराया गया । उक्त कार्यक्रम में खरगोन विधायक माननीय रवि जोशी, मुख्य अतिथि रहे एबम अध्यक्षता सीसीबी के अध्यक्ष रंजीत सिंह डंडीर ने की । विशेष अतिथि सहायक आयुक्त प्रशान्त आर्य व कैलाष जी अग्रवाल रहे ।

खरगोन शहर की गोकुलदास पब्लिक स्कूल संस्थान में शुटिंग एकेडमी का शुभारंभ हुआ

बताया जा रहा है निमाड़ का पहला एकेडमी होगा जहा बच्चे अपनी कला का प्रदर्शन करके देश प्रदेश का नाम रोशन करेंगे, इस मौके पर एसपी धर्मविर सिह अभिषेक तिवारी ओर एशवर्य ने शुटिंग एकडमी का फिटा काटकर शुभारंभ किया, इस दौरान प्रशासनीक अधिकारियों ने पहल के शुभारंभ अवसर पर जिलेवासियों को शुभकामना दी है।

भिण्ड विधानसभा को प्रदेश की नम्बर 1 विधानसभा बनाकर रहूंगा: संजीव सिंह

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । भारतीय जनता पार्टी के युवा नेता भिण्डविधानसभा क्षेत्र से विधायक संजीव सिंह कुशवाह नेअनेकों विकास कार्यों का एवं भूमि पूजन कर जनता को सौगात समर्पित की। कार्यक्रम में प्राचार्य मालवीय विमल एवं कॉलेज के प्राध्यापक स्टाफ इत्यादि लोग विशेष रूप से उपस्थित थे । विधायक श्री कुशवाह ने कॉलेज परिसर में ओपन जिम, बास्केट वॉल कोड, बॉलीबाल कोड का हुआ भूमिपूजन किया। उन्होंने कहा कि भिंड विधानसभा को मध्यप्रदेश की नंबर 1 विधानसभा बना कर रहूंगा विकास और प्रगति के लिए किसी भी प्रकार की कसर नहीं छोड़ूंगा मैं विधायक नहीं जनता का जन सेवक बनकर आप सभी के बीच एक प्राथमिकता के आधार पर विकास को आत्मनिर्भर दिशा से जुड़ने के लिए मैं कार्य करूंगा मध्य प्रदेश में भाजपा की सरकार है और विकास के लिए हमेशा मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान संवेदनशील रहते हैं। ठेकेदार अजीत सिंह कुशवाह ने विधायक सहित सभी अतिथियों का स्वागत किया ।

ट्रेड लायसेंस फीस को वापिस लेने के लिये 26 अप्रैल को मप्र के व्यापारिक संगठन और चेम्बर ऑफ कॉमर्स की वर्चुअल गूगल मीट होगी

राज्य शासन द्वारा 21 अप्रैल को राजपत्र में जारी नोटीफिकेशन जिसमें दुकानों के ट्रेड लायसेंस को सडकों की चौडाई से गणना करना बताया गया है, इसका पूरे प्रदेश के व्यापारिक संगठन विरोध कर रह है। फेडरेशन ऑफ म.प्र.चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री की अगवाई में 26 अप्रैल को वर्चुअल रूप से गूगल मीट के माध्यम से भोपाल, इन्दौर, जबलपुर, रतलाम, सतना सहित प्रदेश के सभी चेम्बर ऑफ कॉमर्स एवं कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेंडर्स (कैट) म.प्र. के जिला अध्यक्ष और अन्य व्यापारिक संगठन इसके विरोध में एक रणनीति बनायेंगे और प्रदेश स्तर पर सामूहिक मांगपत्र मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री को प्रेषित करेंगे, कि नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा जारी किये गये नोटीफिकेशन को शासन वापिस ले, क्योंकि वर्तमान शुल्क से इसमें प्रस्तावित शुल्क कई गुना बढा दिया गया है, इसका व्यापारी विरोध कर रहे हैं। फेडरेशन ऑफ म.प्र.चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री के उपाध्यक्ष एवं कैट मध्यप्रदेश के अध्यक्ष भूपेन्द्र जैन ने बताया कि फेडरेशन के अध्यक्ष डॉ. राधाशरण गोस्वामी जी ने प्रदेश के सभी व्यापारिक संगठनों से व्यक्तिगत चर्चा की है और सभी को एक मंच पर लाकर आव्हान किया है कि वे अपना इस नोटीफिकेशन पर मत प्रकट करें ताकि सभी की भावनाओं के अनुसार इसे राज्य सरकार द्वारा वापिस लिये जाने पर आगामी कार्यवाही कर सके। जैन ने गूगल मीट की लिंक सभी व्यापारिक संगठनों को प्रेषित की है और निवेदन किया है कि अधिक से अधिक संख्या में इस पर जुडकर अपनी बात रखे।

डकैती की योजना बना रहे अंतर्राज्यीय चोर गिरोह को मौ पुलिस ने धर दबोचा

पुलिस अधीक्षक ने प्रेस कांफ्रेंस कर बताया कि 7 आरोपियों को किया गया गिरफ्तार

पंकज त्रिपाठी
दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । पुलिस अधीक्षक शैलेन्द्र सिंह चौहान एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमलेश कुमार खरपुसे के निर्देशन में असमाजिक तत्वों एवं गुंडा, बदमाशों की धरपकड हेतु समस्त राजपत्रित अधिकारी एवं समस्त थाना प्रभारी को मुखबिर तंत्र विकसित करने के लिये निर्देशित किया गया था। इसी तारतम्य में अनुविभागीय अधिकारी गोहद सौरभ कुमार के मार्गदर्शन में मौ थाना प्रभारी उदयभान सिंह यादव को दिनांक 24/04/23 को मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुयी कि ग्राम मदरौली गुरियाची रोड पर सायनपुरा के पास बरवा नदी की पुलिया के पास बने स्टैप डैम पर कुछ अज्ञात बदमाशों द्वारा डकैती डालने की योजना बना रहे है। उक्त मुखबिर की सूचना पर से थाना प्रभारी मौ द्वारा तत्काल कार्यवाही करते हुये एक टीम बनाकर बताए गये स्थान पर ग्राम मदरौली रोड की मोड पर पहुँचकर टीम को दो भागों में विभाजित करके स्टैप डेम पर पहुंचे एवं छिपकर देखा तो डैम पर कुछ लोग बैठे दिखें । उन लोगों की बातें सुनकर पता चला कि ग्राम सहरौली मे एक व्यक्ति के घर मे बहुत माल है, वहाँ आज रात में ही डकैती डालेगें, अच्छा माल मिलेगा । डकैती की योजना का पूर्ण रूप से इतमिनान होने पर पुलिस टीम द्वारा सभी आरोपियों की चारो तरफ से घेराबन्दी कर पकड़ लिया गया । पकड़े गये आरोपियों से 2 बन्दूक

सिंगल बैरल 12 बोर, 1 बन्दूक डबल बैरल 12 बोर, 1 बन्दूक 315 बोर, 2 देशी कट्टे 315 बोर के 5 जिन्दा राउण्ड 12 बोर एवं 5 जिन्दा राउण्ड 315 बोर के तथा 3 मोटर सायकिल बरामद की गयी है। जिस पर से थाना मौ मे अपराध क. 96/23 धारा 399,400,402 भादवि. 11/13 एमपीडीपीके एक्ट 25/27 आर्म्स एक्ट कायम किया गया है। उक्त सम्बन्ध मे सभी आरोपियों से पूछताछ की जा रही है,जिसमें और भी अपराधों के खुलासे होने की संभावना है। 7 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

जप्त मशरूका का विवरण –दो बन्दूक सिंगल बैरल 12 बोर, 5 जिन्दा राउण्ड 315 बोर, एक बंदूक डबल बैरल 12 बोर, एक बन्दूक 315 बोर, दो देशी कट्टे 315 बोर के मय 5 जिन्दा राउन्ड, 19 मोटर सायकिल, एक तलवार लोहे की जप्त की गई।जिसकी अनुमानित कुल कीमत 21 लाख रुपये।

सराहनीय भूमिका-इस उल्लेखनीय कार्य में थाना प्रभारी मौ निरीक्षक उदयभान सिंह यादव, उपनिरीक्षक प्रवेन्द्र सिंह, उपनिरीक्षक अजय यादव, उपनिरीक्षक अरविन्द यादव, सहायक उपनिरीक्षक रामविलास शर्मा, सहायक उपनिरीक्षक मुन्ना सिंह सिकरवार, सहायक उपनिरीक्षक सुमाष गौतम, सहायक उपनिरीक्षक हुकुम सिंह,प्रधान आरक्षक राजकुमार प्रधान आरक्षक हेमन्त आर्य, आरक्षक गन्धर्व गुर्जर, आरक्षक ओमवीर सिंह, आरक्षक अनिल, आरक्षक सत्यप्रताप, आरक्षक सुभाष, आरक्षक भगवत, आरक्षक रंजीत सिंह,अजय यादव की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

क्यों दूसरा सचिन मिलना नामुमकिन है

5 फैक्ट्स के जरिए जानिए क्यों तेदुलकर जैसा न कोई पहले हुआ और न आगे होगा

क्रिकेट जगत में सचिन तेंदुलकर का कद साल दर साल बढ़ता ही चला गया। आखिर में शतकों का शतक यानी कि %महाशतक% जमाने वाले पहले क्रिकेटर बने। क्रिकेट इतिहास में किसी एक खिलाड़ी के लिए यह कहना हो तो जो नाम सबसे ज्यादा लोगों के जेहन में आएगा वह है सचिन तेंदुलकर। क्रिकेटर्स बहुत हुए, स्टार क्रिकेटर्स भी हुए, लेकिन सचिन जैसा न पहले हुआ था और न बाद में हो सकता है। इंटरनेशनल क्रिकेट में 664 मैच, 782 इनिंग्स, 34357 रन और 100 शतक। ये क्रिकेट में बल्लेबाजी से जुड़े स्टैट्स के माउंट एवरेस्ट हैं। बहुत से खिलाड़ियों ने इस पर चढ़ाई करने की कोशिश की है, लेकिन कोई आधे रास्ते में हांफ गया तो किसी का जज्बा चोटी के करीब पहुंचकर जवाब दे गया। ये रिकॉर्ड्स अनब्रेकेबल माने जाते हैं और फिलहाल कोई भी इनके आस-पास नहीं है। इस लिंक पर क्लिक कर पढ़िए सचिन के कौन-कौन से रिकॉर्ड ऐसे हैं जिनका टूटना बहुत मुश्किल है। ऐसा नहीं है कि सचिन पहले ऐसे बल्लेबाज हैं, जिन्होंने दुनियाभर के गेंदबाजों के छक्के छुड़ाए। उनसे पहले डॉन ब्रैडमैन, विव रिचर्ड्स जैसे धुरंधर आए थे। लेकिन, सचिन दुनिया के पहले ऐसे खिलाड़ी बने, जिनकी बदौलत क्रिकेट प्रोफेशनल दुनिया में करोड़ों-अरबों का खेल बन गया। सचिन मल्टी मिलियन डॉलर की ब्रांड डील पाने वाले पहले खिलाड़ी बने थे। सबसे पहले 1995 में वर्ल्ड टेल ने उनके साथ करार किया था। उसके बाद 2001 में 800 करोड़ के एग्रीमेंट के साथ 5 साल के लिए डील को आगे बढ़ाया। वे 100 करोड़

से ज्यादा की डील करने वाले पहले क्रिकेटर बन गए। इसके बाद ही बड़े-बड़े फाइनेंशियल प्लेयर्स को अहसास हुआ कि क्रिकेटर्स भी ब्रांड बन सकते हैं और उनसे जुड़कर अपने प्रोडक्ट को हिट कराया जा सकता है। सचिन ने जो रास्ता खोला उस पर चल कर धोनी, कोहली, शर्मा जैसे अरबपति खिलाड़ियों की फौज आई। रिटायरमेंट के बाद भी सचिन की नेटवर्थ 1450 करोड़ रुपए है। एक समय सचिन भारतीय क्रिकेट फैंस की उम्मीद का दूसरा नाम थे। तब टीम गेम क्रिकेट वन मैन आर्मी बन गया था। 90%ह्य के दौर में जैसे ही सचिन आउट हो जाते थे, तो खेल खत्म माना जाता था। उनकी लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 21वीं सदी के शुरुआती कुछ सालों तक सचिन के आउट होने पर टीवी बंद हो जाया करते थे। कारण यह था कि जब तक सचिन क्रीज पर होते थे, टीम इंडिया की जीत की उम्मीद बनी होती थी। 2000 के शुरुआती दशक में सचिन भारतीय युवाओं का रोल मॉडल बन गए। हर गली-मोहल्ले में उनका नाम होता। यहां तक कि बच्चों को पड़ने वाली पिता की डांट में भी सचिन होते थे। सचिन की बैटिंग को देखकर लाखों-करोड़ों युवाओं ने क्रिकेटर बनने के सपने के साथ बल्ला उठाया। उनमें भारत को दो वर्ल्ड कप जिताने वाले कप्तान महेंद्र सिंह धोनी, विस्फोटक बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग, युवराज सिंह, विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे कई नाम हैं, जो आगे जाकर भारतीय टीम का चेहरा बने। ये खिलाड़ी कई इंटरव्यू में कह चुके हैं कि क्रिकेट खेलने की उनकी प्रेरणा सचिन ही थे। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व दिग्गज डॉन ब्रैडमैन को क्रिकेट इतिहास का सबसे महान बल्लेबाज कहा जाता है। उन्होंने 52 टेस्ट मैचों के अपने करियर में 29 शतक की मदद से 6996 रन बनाए थे। उनका औसत 99.96 का रहा था। एक बार डॉन ब्रैडमैन ने सचिन की बल्लेबाजी देखकर कहा था कि यह लड़का मेरी तरह बैटिंग करता है। सचिन दुनिया के इकलौते ऐसे बल्लेबाज हैं, जिनके बारे में डॉन ब्रैडमैन ने यह बात कही थी। इसके बाद ब्रैडमैन ने अपने बर्थडे पर सचिन तेंदुलकर को इनवाइट भी किया था। क्रिकेट के महानतम बल्लेबाजों में से एक सचिन तेंदुलकर ने आज जीवन की हाफ सेंचुरी पूरी कर ली है। वे आज 50वां साल को हो गए। सचिन ने पाकिस्तान के खिलाफ 15 नवंबर 1989 को इंटरनेशनल डेब्यू किया था। 16 नवंबर 2013 को वेस्टइंडीज के खिलाफ आखिरी मैच खेला था। उनका करियर 24 साल 1 दिन का रहा। इस दौरान उन्होंने कुल 664 मैच खेले और 34357 रन बनाए।

दो मैचों में धोनी ने आई पी एल संन्यास के दिए संकेत

कोलकाता में बोले-फैंस येलो जर्सी में मुझे विदाई देने की कोशिश कर रहे हैं

मुंबई। चेन्नई सुपर किंग्स ने रविवार को कोलकाता नाइट राइडर्स को उसके होम ग्राउंड कोलकाता के इडेन गार्डेन में 49 रन से हराया। यह धोनी का ढ्क्क्र में आखिरी सीजन हो सकता है। इसके संकेत धोनी लगातार दो मैचों से दे रहे हैं। पहले होमग्राउंड में हैदराबाद के खिलाफ जीत के बाद कहा कि वह अपने करियर के अंतिम फेज का आनंद ले रहे हैं। वहीं कोलकाता में छ्स्य्र को सपोर्ट करने पहुंचे फैन्स के प्रति आभार जताया और कहा कि वे विदाई देने की कोशिश कर रहे हैं। कोलकाता के इडेन गार्डेन में रविवार को छ्स्य्रऔर च्यक्र के मैच देखने के लिए बहुत संख्या में छ्स्य्र और धोनी के नंबर की जर्सी पहनकर स्टेडियम में पहुंचे थे। मैच के बाद इडेन गार्डेन में छ्स्य्र फैन्स पर धोनी ने कहा- मैं समर्थन के लिए धन्यवाद कहना चाहता हूं। वे बड़ी संख्या में छ्स्य्र को सपोर्ट करने पहुंचे। इनमें से ज्यादातर लोग अगली बार केकेआर की जर्सी में आएंगे। वे मुझे विदाई देने की कोशिश कर

रहे हैं, इसलिए भीड़ का आभार जताता हूं। धोनी ने गेंदबाजों के चोटिल होने और उनके प्रदर्शन पर कहा कि अगर कोई चोटिल होता है, तो वह कुछ नहीं कर सकता है। हमारे तेज गेंदबाजों और स्पिनरों ने अपना काम किया। हमें पता था कि उनकी टीम में ऐसे बल्लेबाजों की संख्या ज्यादा है, जो बड़े शॉट खेल सकते हैं और किसी भी परिस्थिति में वह मैच को पलटने की क्षमता रखते हैं। हमने उनको सम्मान दिया। हमें जल्दी विकेट लेकर दबाव बनाने की जरूरत थी। जिसे हमारे गेंदबाजों ने बखूबी निभाया। धोनी ने रहाणे की तारीफ की। रहाणे ने 29 गेंदों में नाबाद 71 रन की पारी खेली। धोनी ने कहा- हमें किसी बल्लेबाजी की क्षमता का पता तब चलता है, जब हम उसे मौका देते हैं। बल्लेबाज को अपने मन मुताबिक खेलने की छूट देते हैं। उसकी क्षमता के अनुरूप उसे बल्लेबाजी क्रम में जगह दी जाती है। इसके लिए कुछ को त्याग भी करना होता है। ताकि किसी को मौका मिल सके और टीम को सफलता मिले। एमएस धोनी 41 साल के हैं और 240 आईपीएल मैचों का हिस्सा रहे हैं। चेन्नई ने धोनी की कप्तानी में चार ढ्क्क्रट्रॉफी जीती है। उन्होंने छह मैचों की चार पारियों में 59 रन बनाए हैं। इस दौरान धोनी का औसत 59 और स्ट्राइक रेट 210.71 का रहा है। उन्होंने दो चौके और छह छक्के लगाए हैं।

कोहली की कप्तानी में लगातार दूसरा मैच जीता बेंगलुरु

बेंगलुरु। ग्लेन मैक्सवेल और फाफ डु प्लेसिस की शतकीय साझेदारी के दम पर रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने इंडियन प्रीमियर लीग-16 के 32वें मुकाबले में राजस्थान रॉयल्स को 7 रन से हराया। यह बेंगलुरु की राजस्थान पर ओवरऑल 14वीं जीत है। दोनों के बीच अब तक 29 मुकाबले खेले गए हैं। इनमें से 12 राजस्थान ने जीते हैं।मौजूदा सीजन की बात करें तो यह बेंगलुरु की 7 मैचों में चौथी जीत है। टीम पॉइंट्स टेबल के 5 नंबर पर है।एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में बेंगलुरु की टीम ने टॉस हारकर बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 9 विकेट पर 189 रन बनाए। जवाब में राजस्थान के बल्लेबाज 20 ओवर में 6 विकेट पर 182 रन ही बना सके। पहले बल्लेबाजी करने उतरी बेंगलुरु ने जीरो पर कप्तान विराट कोहली का विकेट गंवाया। फिर फाफ डु प्लेसिस ने 62 और ग्लेन मैक्सवेल ने 77 रन बनाए। ट्रेंट बोल्ट और संदीप शर्मा ने दो-दो विकेट लिए। एक रन

पर बटलर का विकेट गंवाने के बाद ओपनर यशस्वी जायसवाल और देवदत्त पडडीकल ने राजस्थान को पहले झटके से उबारा। दोनों ने दूसरे विकेट के लिए 66 बॉल पर 98 रन की साझेदारी की। 190 रन के जवाब में राजस्थान की शुरुआत धीमी रही। टीम ने एक रन के स्कोर पर बटलर का विकेट गंवाया। शुरुआती 6 ओवर में राजस्थानी बल्लेबाज एक विकेट पर 47 रन ही बना सके। टॉस हारकर बल्लेबाजी करते हुए बेंगलुरु ने 20 ओवर में 9 विकेट पर 189 रन बनाए। एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में बेंगलुरु की शुरुआत अच्छी नहीं रही और कप्तान विराट कोहली पहली ही बॉल पर ट्रेंट बोल्ट का शिकार हो गए। फिर टीम ने 12 रन पर शहबाज अहमद का विकेट गंवाया। यहां से ग्लेन मैक्सवेल और फाफ डु प्लेसिस ने शतकीय साझेदारी करते हुए टीम का स्कोर 135 पार पहुंचाया। राजस्थान की ओर से ट्रेंट बोल्ट और संदीप शर्मा ने 2-2 विकेट लिए।

जंतर-मंतर पर पहलवानों का धरना जारी

बजरंग बोले- बृजभूषण की गिरफ्तारी के बाद ही उठेंगे

पानीपत। रेसलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया (ङ्खस्नढ्ढ) के प्रमुख बृजभूषण सिंह के खिलाफ रविवार दोपहर से जंतर-मंतर पर पहलवानों का धरना जारी है। 7 महिला पहलवानों ने सिंह के खिलाफ पार्लियामेंट स्ट्रीट थाने में शिकायत भी दर्ज कराई है। पहलवानों ने कहा- 3 महीने हो गए, पर हमें न्याय नहीं मिला, इसलिए हम फिर से विरोध कर रहे हैं। हम न्याय की मांग करते हैं, अभी तक स्नढ्ढक्र दर्ज नहीं की गई है। पहले हम से कहा जाता था कि स्नढ्ढक्र कराओ, अब हम स्नढ्ढक्र कराने जा रहे हैं तो पुलिस सुन नहीं रही है। पहलवान विनेश फोगाट ने आरोप लगाया है कि पुलिस खाना और पानी अंदर नहीं लाने दे रही है। बाहर खड़े पहलवानों को भी अंदर नहीं आने दिया जा रहा। विनेश ने कहा कि उनकी तबियत खराब है। वे दवाई लेने बाहर गई थीं, जब वे लौटीं तो पुलिस ने उन्हें भी अंदर घुसने से रोका। पहलवान साक्षी मलिक ने कहा कि हमने 2 दिन पहले ही थाने में शिकायत दी थी। मगर अभी हमारी सुनवाई नहीं हुई, न ही स्नढ्ढक्र दर्ज हुई है। शिकायत देने वालों में एक नाबालिग समेत सात पहलवान शामिल हैं। ढाई महीने इंतजार करने के बाद हमने फिर से धरना देने का फैसला लिया है। साक्षी ने कहा- न ही हमें पता कि कमेटियों ने जांच रिपोर्ट सब्मिट की है या नहीं। लोग हमें ही झूठा बताने लगे थे। जांच रिपोर्ट सार्वजनिक होनी चाहिए, मगर अभी इसका कुछ अता पता नहीं है। एक लड़की का मामला कितना सेंसिटिव होता है, यह आप सब समझ सकते हैं। बजरंग पूनिया ने कहा- हमारा धरना अब तभी खत्म होगा, जब बृजभूषण सिंह को अरेस्ट किया जाएगा। हमारा सब्र जवाब दे चुका है। जांच के लिए दो कमेटियां बनीं, लेकिन रिजल्ट कुछ नहीं आया। अब इस केस की छ्वढ्ढ जांच होनी चाहिए। जंतर-मंतर पर फिर रोई विनेश फोगाट।

ऐ पी एल मे आज डीसी बनाम एसआरएच

इंडियन प्रीमियर लीग (ढ्क्क्र) में आज पॉइंट्स टेबल के बॉटम में मौजूद दोनों टीमों के बीच मुकाबला खेला जाएगा। हैदराबाद के राजीव गांधी इंटरनेशनल स्टेडियम में दिल्ली कैपिटल्स (ष्ठष्ट) और सनराइजर्स हैदराबाद (स्क्र॥) के बीच शाम 7=30 बजे से मैच शुरू होगा।दिल्ली ने जहां अपने पिछले मुकाबले में सीजन की पहली जीत दर्ज की। वहीं हैदराबाद को पिछले 2 मुकाबलों में हार का सामना करना पड़ा है। आगे स्टोरी में हम दोनों टीमों का हेड टु हेड रिकॉर्ड, टूर्नामेंट में प्रदर्शन, टॉप प्लेयर्स, पिच रिपोर्ट, वेदर कंडीशन, पॉसिबल प्लेइंग और इम्पैक्ट प्लेयर्स जानेंगे...हार की हैट्रिक नहीं चाहेगी स्क्र॥ हैदराबाद ने टूर्नामेंट में 6 मैच खेले हैं, 4 में उन्हें हार और महज 2 में जीत मिल सकी। टीम 4 अंकों के साथ पॉइंट्स टेबल में नौवें नंबर पर है।

जन्मदिन के मौके पर मास्टर ब्लास्टर पर बरसीं दुआएं

शास्त्री ने लिखा-आप जीवन में शतक पूरा करें, कैफ -24 अप्रैल नेशनल क्रिकेट डे घोषित हो

मुंबई। सचिन तेंदुलकर के 50 साल के हो गए हैं। तेंदुलकर ने 15 नवंबर 1989 को पाकिस्तान के खिलाफ इंटरनेशनल डेब्यू किया था।16 नवंबर 2013 को वेस्टइंडीज के खिलाफ आखिरी मैच खेला था। उनका करियर 24 साल 1 दिन का रहा। इस दौरान उन्होंने कुल 664 मैच खेले और 34357 रन बनाए। सचिन को जन्मदिन पर कई पूर्व इंटरनेशनल क्रिकेटरों ने बधाई दी है। वहीं पूर्व खिलाड़ी मोहम्मद कैफ ने सचिन को 50वें जन्मदिन पर बधाई देते हुए 24 अप्रैल को नेशनल क्रिकेट डे घोषित करने का सुझाव दिया है। वीवीएस लक्ष्मण- सचिन के साथ खेल चुके

और अभी नेशनल क्रिकेट एकेडमी की जिम्मेदारी संभाल रहे पूर्व क्रिकेटर वीवीएस लक्ष्मण ने कहा है कि यह बहुत शुभ दिन है। दुनिया को आप जैसे प्रतिभावान और अच्छा इंसान मिला। आपकी सभी सपने पूरें हों। आप स्वस्थ रहें। मोहम्मद कैफ ने सचिन तेंदुलकर को बधाई देते हुए पोस्ट किया है- क्यों न 24 अप्रैल को नेशनल क्रिकेट डे घोषित कर दिया जाए, आप लोगों क्या सोचते हैं? मैनें उनके जैसा क्रिकेट का दीवाना नहीं देखा है। क्रिकेट के साथ ही भारत में क्रिकेट प्रति अलख जगाने वाले शख्स को जन्मदिन की बधाई। रवि शास्त्री ने सचिन को जन्मदिन की बधाई देते हुए अपने पोस्ट में लिखा है हैप्पी बर्थडे बिग बॉस, जीवन की हाफ सेंचुरी पूरा करने पर आपको बधाई। आप इसमें भी सेंचुरी पूरा करे। आपको इस दिन और इस साल के लिए हार्दिक बधाई।

जडेजा ने दो महेंद्र सिंह को बताया करियर का मसीहा

टीम इंडिया और चेन्नई सुपर किंग्स (छ्स्य्र) के ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा ने स्टार स्पोर्ट्स को दिए इंटरव्यू में कहा है कि उनके करियर में महेंद्र सिंह नाम के दो व्यक्तियों का अहम योगदान रहा है। बचपन में मेरे कोच महेंद्र सिंह चौहान ने मेरे क्रिकेट करियर को निखारने में मदद की है। वहीं टीम इंडिया में आने के बाद मेरे करियर को संवारने में महेंद्र सिंह धोनी का बहुत ज्यादा योगदान रहा। जडेजा ने इंटरव्यू में कहा- जब मैं आठ साल का था तो 1996 में जामनगर में कोच महेंद्र सिंह चौहान के पास ही ट्रेनिंग करने के लिए जाता था। सर का मेरे करियर में अहम योगदान रहा है। शुरुआत में मैं तेज गेंदबाज बनना चाहता था। तेज गेंदबाजों को बाउंसर फेंकते देख मैं सोचता था कि मैं भी ऐसा करूंगा। पर मेरे बॉलिंग में इतनी स्पीड नहीं थी। मेरे कोच महेंद्र सिंह चौहान ने मुझसे कहा कि तुम्हारी ज्यादा हाइट नहीं है, और तुम्हारी गेंद में गति भी नहीं है। इसलिए उन्होंने मुझे स्पिन गेंदबाजी करने का सुझाव दिया। मैंने भी सोचा कि हां जितनी हाइट एक तेज गेंदबाज के लिए होनी चाहिए मेरी नहीं है। फिर मैंने लेफ्ट आर्म स्पिन गेंदबाजी करनी शुरू की थी। मैं आज भी सर से मिलने जाता हूं। हालांकि वहां पर बहुत ज्यादा बच्चे आते हैं, इसलिए मैं ट्रेनिंग नहीं कर पाता हूं। जडेजा ने आगे कहा, कि मैं धोनी भाई से भी कह चुका हूं कि मेरे क्रिकेट की यात्रा महेंद्र सिंह चौहान और महेंद्र सिंह धोनी के बीच में ही रही है।

डेविड वॉर्नर-अक्षर पटेल फॉर्म में, ब्रूक-मारकंडे दिला सकते हैं पॉइंट्स

इंडियन प्रीमियर लीग (ढ्क्क्र) में आज सनराइजर्स हैदराबाद और दिल्ली कैपिटल्स के बीच मैच खेला जाएगा। हैदराबाद के राजीव गांधी स्टेडियम में मैच शाम 7=30 से शुरू होगा। आगे स्टोरी में हम इस मैच की फैंटेसी-11 के टॉप खिलाड़ियों के बारे में जानेंगे। उनका ढ्क्क्र रिकॉर्ड और पिछले प्रदर्शन पर भी नजर डालेंगे, जिन्हें आप अपनी टीम में शामिल कर सकते हैं। विकेटकीपर के तौर पर हेनरिक क्लासेन को लिया जा सकता है। सनराइजर्स हैदराबाद के साउथ अफ्रीकी बल्लेबाज हेनरिक क्लासेन ने मुंबई इंडियंस के खिलाफ 16 बॉल में 36 रन की विस्फोटक पारी खेली। वह आज भी पॉइंट्स दिला सकते हैं।

सचिन का आज 50वां जन्मदिन

टॉप-6 रिकॉर्ड: मैच, रन, शतक बनाने में कोई आस-पास नहीं, वर्ल्ड कप के सबसे कामयाब बल्लेबाज भी

क्रिकेट के महानतम बल्लेबाजों में से एक सचिन तेंदुलकर ने आज जीवन की हाफ सेंचुरी पूरी कर ली है। वे आज 50साल के हो गए हैं। सचिन ने पाकिस्तान के खिलाफ 15 नवंबर 1989 को इंटरनेशनल डेब्यू किया था। 16 नवंबर 2013 को वेस्टइंडीज के खिलाफ आखिरी मैच खेला था। उनका करियर 24 साल 1 दिन का रहा। इस दौरान उन्होंने कुल 664 मैच खेले और 34,357 रन बनाए। सचिन के बर्थडे के मौके पर हम उनके ऐसे टॉप-6 रिकॉर्ड्स फिर से याद करेंगे, जिनको तोड़ पाना असंभव जैसा है। क्रिकेट में किसी भी रिकॉर्ड की बात हो तो सचिन का नाम आ ही जाता है। सचिन 200 इंटरनेशनल टेस्?ट मैच खेलने वाले दुनिया के एकमात्र खिलाड़ी हैं। इस सूची में सचिन पहले नंबर पर हैं तो जेम्स एंडरसन 179 टेस्?ट मैच के साथ दूसरे नंबर पर हैं। सिर्फ टेस्?ट में ही नहीं, बल्कि उनके नाम दुनिया में सबसे ज्?यादा इंटरनेशनल वनडे मैच खेलने का रिकॉर्ड भी है। सचिन वनडे क्रिकेट में भी सबसे ज्यादा मैच खेलने वाले दुनिया के पहले खिलाड़ी हैं। साल 1989 में अपने वनडे करियर की शुरुआत करने वाले इस खिलाड़ी ने 23 साल के अपने वनडे करियर में कुल 463 वनडे मैच खेले हैं। सचिन ने टीम इंडिया के लिए 1990 से 1998 तक लगातार 185 वनडे मैच बिना रुके खेले। यह अपने आप में एक वर्ल्ड रिकॉर्ड है। वनडे में सबसे ज्यादा मैच खेलने के मामले में उनके बाद श्रीलंका के महेला जयवर्धने का नंबर आता है, जिन्?होंने 448 वनडे मैच खेले हैं। जयवर्धने इनके करीब तो पहुंचे, लेकिन इस रिकॉर्ड को तोड़ नहीं पाए। इंटरनेशनल क्रिकेट (तीनों फॉर्मेट को मिलाकर) में सबसे ज्यादा रन क्रिकेट के भगवान सचिन के नाम ही हैं। इंटरनेशनल क्रिकेट में उन्होंने 30,000 से अधिक रन बनाए हैं। क्रिकेट के तीनों फॉर्मेट में इतने रन बनाने वाले वह दुनिया के एकमात्र खिलाड़ी हैं। उनके कुल रन 34,357 हैं। इस मामले में दूसरे नंबर पर श्रीलंका के कुमार संगकारा हैं। उन्होंने 28,016 रन बनाए हैं। वर्ल्ड क्रिकेट में 100 शतक लगाने वाले खिलाड़ियों में अकेला नाम सचिन तेंदुलकर का है। ये एक बड़ा रिकॉर्ड है, जिसे तोड़ना किसी भी बल्लेबाज के लिए मुश्किल है। सचिन के बाद सबसे अधिक शतक लगाने वालों में विराट कोहली (75) हैं। तीसरे नंबर पर ऑस्ट्रेलिया के रिकी पोंटिंग (71) का नाम आता है। सचिन ने टेस्ट में 51 और वनडे में 49 शतक जड़े हैं। सचिन ने शतकों के अलावा अर्धशतक भी खूब लगाए। सचिन के नाम 782 पारियों में कुल 164 (तीनों फॉर्मेट) अर्धशतक लगाने का रिकॉर्ड दर्ज है। दूसरे नंबर पर ऑस्ट्रेलिया के रिकी पोंटिंग हैं जिन्होंने 146 अर्धशतक लगाए हैं। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे अधिक चौके लगाने का रिकॉर्ड भारतीय बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर के नाम ही दर्ज है। मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर ने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर में 4076 चौके जड़े। उनके नाम टेस्ट में 2058, वनडे में 2016 और टी-20 में 2 चौके हैं।

रिया कपूर ने शुरू की द क्रू की शूटिंग

निर्माता रिया कपूर ने अपनी मां सुनीता कपूर के जन्मदिन पर शेयर किया कि वह अपनी अगली फिल्म द क्रू की शूटिंग शुरू कर रही हैं। रिया ने इंस्टाग्राम पर दो तस्वीरें शेयर की। पहली तस्वीर में फिल्म का क्लैप बोर्ड है, जबकि दूसरी में उनकी मां की तस्वीर है।कैप्शन के लिए, रिया ने लिखा- क्या यह वास्तविक जीवन है, डे 1. जन्मदिन मुबारक हो मां, मैं तुम्हारे बिना यहां तक नहीं पहुंच सकती! मैं तुमसे प्यार करती हूं! फिल्म में तब्बू, करीना कपूर खान और कृति सेनन हैं। करीना ने कमेंट सेक्शन में लिखा, करीना कपूर खान- सो रेडी माय गर्ल लव यू माय रिया।कहानी तीन महिलाओं की है, जो जीवन के साथ आगे बढ़ने के लिए काम करती हैं। लेकिन जैसे-जैसे वे आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं, उनकी सामने मुसीबत आनी शुरु हो जाती है, जो उन्हें खतरनाक परिस्थितियों की ओर ले जाती है, जिससे वे झूठ के जाल में फंस जाते हैं।राजेश कृष्णन द्वारा निर्देशित और बालाजी मोशन पिक्चर्स लिमिटेड और अनिल कपूर प्रोडक्शंस द्वारा सह-निर्मित यह फिल्म मार्च 2023 के अंत तक तैयार हो जाएगी।

एक्ट्रेस सेलिना जेटली ने अमिताभ बच्चन के सपोर्ट में उठाई आवाज

बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन के ट्विटर अंकाउट से ब्लू टिक हटने के बाद अभिनेत्री सेलिना जेटली ने भी उनके सपोर्ट में आवाज उठाई है. दरअसल, हाल ही में ट्विटर ने सब्सक्रिप्शन न होने के चलते कई बड़े यूजर्स के ट्विटर अंकाउट से ब्लू टिक हटा दिया था, जिसमें एक्टर अमिताभ बच्चन का नाम भी शामिल था. वहीं ट्विटर ने बाद में यह घोषणा की थी कि जिनके ट्विटर पर 1 मिलियन से ऊपर फॉलोअर्स हैं, उन्हें कोई भुगतान नहीं करना पड़ेगा. इसके बाद अमिताभ बच्चन ने आपत्ति जताई थी और उन्होंने कहा कि उन्हें सब्सक्रिप्शन के लिए क्यों भुगतान करना पड़ा जबकि उनके ट्विटर पर 48.4 फॉलोअर्स हैं. इसी के चलते सोमवार को एक्ट्रेस सेलिना जेटली ने अमिताभ बच्चन के सपोर्ट में एलन मस्क (श्वद्यश्ठ स्ह्लह्यद्य) को टैग करते हुए ट्वीट कर लिखा- डियर एलन मस्क मैं पूरे सम्मान और एक प्रशंसक के तौर पर आपका इस तथ्य पर ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं कि अमिताभ बच्चन जैसे ग्लोबल आइकन से आपके मंच ट्विटर को बड़ी विश्वसनीयता मिलती है. अमिताभ बच्चन जैसे आइकन लोगों ने ही आज ट्विटर को इतना विश्वसनीय बनाया है. दरअसल, पिछले हफ्ते ब्लू टिक हटने के बाद अमिताभ बच्चन ने ट्वीट करते हुए लिखा था- 4627, अरे मारे गये गुलफाम, बिरज में मारे गये गुलफाम. ए! ट्विटर मौसी, चाची, बहनी, ताई, बुआ झौआ भर के त नाम हैं तुम्हार! पैसे भरवा लियो हमार, नील कमल खातिर. अब कहत हो जेकर 1 मिलियन फोलोअर, नील कमल फ्री. हमार तो 48.4 हैं, अब खेल खतम, पैसा हजम. अमिताभ बच्चन ने कहा था कि आप अब 1 मिलियन फॉलोअर से ऊपर के लोगों के लिए ब्लू टिक फ्री बता रहे हो जबकि हमारे तो 48.4 मिलियन फॉलोअर्स हैं. इसके बावजूद भी हमसे पैसे लिए गए. इसके बाद उन्होंने कहा कि अब तो ब्लू टिक वापस लगा दीजिए. ताकि लोग जान जाएं कि हम ही रियल अमिताभ बच्चन हैं.

ऑरेंज कलर के आउटफिट में ग्लैमर का जलवा बिखेर रहीं श्रद्धा दास

खूबसूरती ऐसी कि आंखें रह जाएंगी खुली

एक्ट्रेस श्रद्धा दास अपनी खूबसूरती और बोल्ड अंदाज से फैंस के दिलों को बेताब करने का हुनर बखूबी जानती हैं। उनकी स्टाइलिश और हॉट तस्वीरें सोशल मीडिया पर सुर्खियां बनती हैं। वहीं, श्रद्धा दास की लेटेस्ट तस्वीरें सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं, जिसमें वो बेहद ही कातिलाना अंदाज में नजर आ रही हैं। एक्ट्रेस श्रद्धा दास ऑरेंज कलर के आउटफिट में कहर बरपाती नजर आ रही हैं, जिन्हें देखकर फैंस बेकरार हो रहे हैं। बंगाली और साउथ फिल्मों में काम कर चुकी एक्ट्रेस श्रद्धा दास लेटेस्ट तस्वीरों में गजब की बला लग रही हैं। एक्ट्रेस श्रद्धा दास अपनी कातिलाना अदाओं से सोशल मीडिया का पारा हाई किए रहती हैं, उनकी तस्वीरें फैंस को काफी पसंद आती है। श्रद्धा दास अब तक 40 से ज्यादा फिल्मों में अपने हुस्न का जलवा बिखेर चुकी हैं। उनके अभिनय के फैंस कायल हैं। ग्रेट ग्रैंड मस्ती, दिल तो बच्चा है जी, सनम तेरी कसम जैसी कई फिल्मों में वो नजर आ चुकी हैं। एक्ट्रेस श्रद्धा दास ने मुंबई यूनिवर्सिटी से पत्रकारिता में ग्रेजुएशन किया था। लेकिन, फिल्मों में काम मिल जाने के बाद वो इसी लाइन से जुड़ गईं। वेस्टर्न लुक हो या फिर ट्रेडिशनल लुक एक्ट्रेस श्रद्धा दास हर आउटफिट में कहर बरपाए रहती हैं। वहीं, एक्ट्रेस के वर्कफ्रंट की बात करें तो श्रद्धा निरीक्षणा और अर्रधाम जैसी तेलुगू फिल्मों की शूटिंग में व्यस्त हैं। सोशल मीडिया पर एक्ट्रेस श्रद्धा दास की तगड़ी फैन फॉलोइंग है। उन्हें इंस्टाग्राम पर 2.8 मिलियन फॉलोवर्स फॉलो करते हैं।

मृणाल ठाकुर के बॉडीकॉन ड्रेस ने खींचा फैंस का ध्यान, देखें स्टाइल भरा अंदाज

बॉलीवुड एक्ट्रेस मृणाल ठाकुर इन दिनों अपने बोल्ड और स्टाइलिश लुक्स के चलते सोशल मीडिया पर लाइमलाइट में बनी हुई हैं। टीवी करियर से बॉलीवुड तक का सफर तय करने वाली एक्ट्रेस का जल्द ही एक अलग अंदाज देखने को मिलेगा मर्डर मिस्ट्री फिल्म गुमराह में। हाल ही में ट्रेलर लॉन्च इवेंट के दौरान एक्ट्रेस मृणाल ठाकुर ने बेहद ही स्टाइलिश आउटफिट पहना हुआ था जिसकी फोटोज उन्होंने इंस्टाग्राम पर शेयर की हैं। एक्ट्रेस मृणाल ठाकुर बॉलीवुड इंडस्ट्री की उन एक्ट्रेसेस में से एक हैं जिन्होंने बेहद ही कम समय में अपने नाम एक बड़ा मुकाम हासिल किया है। एक्ट्रेस जब भी अपनी फोटोज इंस्टाग्राम पर शेयर करती हैं तो वो हमेशा इंटरनेट का पारा गर्म कर देती हैं। हाल ही में एक्ट्रेस मृणाल ठाकुर ने अपने लेटेस्ट ब्लैक एंड व्हाइट कलर के लॉन्ग बॉडीकॉन आउटफिट में फोटोज शेयर की हैं। इन तस्वीरों में एक्ट्रेस कैमरे के सामने अपना कर्वी फिगर फ्लॉन्ट करती हुई बेहद ही किलर लुक्स में पोज देती हुई दिखाई दे रही हैं। ओपन हेयर और न्यूड मेकअप कर के एक्ट्रेस मृणाल ठाकुर ने अपने इस आउटलुक को कंप्लीट किया है। बता दें कि एक्ट्रेस जल्दी ही अपनी अपकमिंग फिल्म गुमराह में एक पुलिस अफसर के रोल में मर्डर मिस्ट्री को सुलझाती नजर आएंगी। ये फिल्म 7 अप्रैल को रिलिज होने जा रही है। एक्ट्रेस मृणाल ठाकुर इन फोटोज में अपना डीपनेक क्लीवेज फ्लॉन्ट करती हुई नजर आ रही हैं। मृणाल ठाकुर सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं और इंस्टाग्राम पर उनकी फैन फॉलोइंग लिस्ट काफी तगड़ी है।

शिमरी ब्लैक आउटफिट में निक्की तंबोली लगीं बला की खूबसूरत

ऊपर से नीचे तक निहारते रह जाएंगे आप

बिग बॉस फेम निक्की तंबोली हमेशा सोशल मीडिया पर अपनी ग्लैमरस और स्टाइलिश लुक्स से फैंस को अपने हुस्न का कायल कर देती हैं। हाल ही में एक्ट्रेस ने अपनी लेटेस्ट सुपबोल्ड फोटोज फैंस के बीच शेयर की हैं जिसमें उनकी हॉटनेस देख कर फैंस एक बार फिर से अपने होश खो बैठे हैं। एक्ट्रेस निक्की तंबोली आए दिन अपनी बोल्ड अदाओं से इंटरनेट का तापमान बढ़ाने में लगी रहती हैं। हाल ही में एक्ट्रेस निक्की तंबोली ने अपने शिमरी आउटफिट लुक्स की तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट की हैं जो तेजी से वायरल हो रही हैं। निक्की तंबोली ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट के दौरान ब्लैक कलर की सिजलिंग ड्रेस पहनी हुई है। इन तस्वीरों में एक्ट्रेस ने काफी डीपनेक ब्लैक ब्लाउज पहना हुआ है और साथ ही थाई स्लिट स्कर्ट पहनी हुई है। ओपन हेयर और न्यूड मेकअप लुक कर के निक्की तंबोली ने अपने आउटलुक को कंप्लीट किया है। हाई हील्स पहन कर एक्ट्रेस ने कैमरे के सामने अपना कर्वी फिगर फ्लॉन्ट करते हुए एक से बढ़कर एक सेक्सी पोज दिए हैं। निक्की तंबोली जब भी अपनी फोटोज इंस्टाग्राम पर शेयर करती हैं तो फैंस उनकी तस्वीरों पर जमकर लाइक्स और कॉमेंट्स करते हैं। बता दें कि एक्ट्रेस की इन तस्वीरों पर भी यूजर्स अमेजिंग, हॉट, टू हॉट टू हेंडल, सुपर गॉर्जियस जैसे कॉमेंट्स कर रहे हैं।

अंगद बेदी साउथ में डेब्यू करने को तैयार

बॉलीवुड के कई सितारे इन दिनों दक्षिण भारतीय सिनेमा में अपने पैर जमाने की कोशिश में लगे हैं। कई सितारे अपने डेब्यू में सफल रहे हैं, तो कुछ जल्द ही डेब्यू की तैयारी में हैं। अब अभिनेता अंगद बेदी इस सूची में शामिल होने जा रहे हैं। अंगद तेलुगु सुपरस्टार नानी की आने वाली फिल्म नानी 30 में नजर आएंगे, जिसमें मृणाल ठाकुर भी मुख्य भूमिका में हैं। अभिनेता जल्द ही फिल्म की शूटिंग भी शुरू करने वाले हैं। अंगद नानी 30 में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए नजर आएंगे। यह अंगद और मृणाल का साथ में दूसरा प्रोजेक्ट है। दोनों जल्द ही रिलीज होने वाली आर बाल्की की शॉर्ट फिल्म लस्ट स्टोरीज 2 में भी दिखाई देंगे। अंगद फिलहाल फिल्म की तैयारी कर रहे हैं और जल्द नानी 30 की शूटिंग भी शुरू करने वाले हैं। वह हाल ही में अपने लुक टेस्ट को फाइनल करने के लिए हैदराबाद भी गए थे। अंगद के एक करीबी सूत्र ने कहा, वह फिल्म की तैयारी कर रहे हैं। यह इस साल आने वाली बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक है। अंगद के दक्षिण भारतीय फिल्मों का हिस्सा बनने का प्रमुख कारण यह कि वह ऐसी फिल्मों को आजमाना चाहते थे जो विभिन्न प्रकार के दर्शकों को ध्यान में रखकर बनाई गई हों। शौर्य के निर्देशन में बनी यह फिल्म एक इमोशनल ड्रामा है, जिसमें बाप-बेटी के रिश्ते की कहानी देखने को मिलेगी। पूर्व भारतीय क्रिकेटर बिशन सिंह बेदी के घर जन्मे अंगद अंडर%9 क्रिकेट खेल चुके हैं। कॉलेज के बाद उन्होंने मॉडलिंग से अपना करियर शुरू किया। उन्होंने 2010 में एक्स्ट्रा इनिंग्स टी-20 की मेजबानी की है। यह शो आयुष्मान खुराना के साथ इंडियन प्रीमियर लीग (ढ्ढक्करु) के दौरान प्रीमियर सत्र के बीच में प्रसारित होता था।

बेटे को पाने के लिए हद पार करेगा अभिमन्यु

सीरियल ये रिश्ता क्या कहलाता है में ढ़ेर सारे ट्विस्ट देखने को मिल रहे हैं, जबसे अभिमन्यु को सच्चाई का पता चला है वह परेशान हो गया है, वह हर वक्त अबीर के बारे में सोचने में लगा हुआ है, वह चाहता है कि अबीर दूबारा उसकी जिंदगी में वापस आ जाए। वहीं दूसरी तरफ अक्षरा अबीर के इलाज के लिए उसे अमेरिका लेकर जाना चाहती है, लेकिन वहीं अभिमन्यु मन बना लिया है कि वह अबीर को अमेरिका नहीं जाने देगा. जिसके बाद से परिवार में सभी लोग परेशान हैं कि कैसे अक्षरा को रोका जाए। आने वाले एपिसोड में देखने को मिलेगा कि अभिमन्यु गोयनका हाउस जाता है और कहता है कि अबीर अमेरिका जाने से पहले वापस आ जाएगा, इस बात को सुनकर सभी हैरान हो जाते हैं कि कैसे यह संभव है। वहीं अबीर अभिनव से बिना मिले चला जाता है, जिस वजह से अभिनव काफी परेशान नजर आता है, गोयनका हाउस में आरोही और अभिम्यु की शादी की तैयारी चल रही होती है, आरोही कहती है कि मुझे सिंपल शादी करना है, मुझे ज्यादा धमाके वाली शादी नहीं करनी है। आरोही कि बात सुनकर मंजरी खुश हो जाती है, अभिमन्यु अपने अंदाज में सुबह आरती करता है और मन ही मन अपने बेटे को वापस पाने के लिए प्रार्थना करता है. क्या अबीर वापस आएगा जानने के लिए आपको नेकस्ट एपिसोड को देखना होगा।

प्रशांत नील की प्रभास-स्टारर सलार की शूटिंग जेम्स बॉन्ड फिल्म के लोकेशन पर हुई

केजीएफ के निर्देशक प्रशांत नील प्रभास स्टारर सलार की शूटिंग कई लोकेशन पर कर रहे हैं ताकि लोगों को यह खूब पसंद आए। मार्च में टीम ने अपना लोकेशन बदलकर मटेरा किया जो इटली के दक्षिण में है। यह जगह अपनी प्रागैतिहासिक सफेदी वाली गुफाओं के लिए प्रसिद्ध है। यहीं फिल्म की शूटिंग हो रही है। सलार प्रशांत नील द्वारा लिखित और निर्देशित और विजय किरागंदुर की होम्बले फिल्म्स द्वारा निर्मित है।2021 की जेम्स बॉन्ड फिल्म नो टाइम टू डाई

की शूटिंग मटेरा में ही हुई थी। कई अन्य अंतरराष्ट्रीय फिल्मों की शूटिंग भी यहां की गई है।यूनिट के सूत्रों ने बताया कि सलार प्रोडक्शन अब नेपल्स में स्थानांतरित हो गया है, जहां दक्षिणी बंदरगाह शहर के केंद्रीय पियाजा डेल प्लेबिस्किटो प्लाजा में फिल्मांकन की तैयारी चल रही है।स्थानीय पुलिस सेट बनाने में मदद कर रही है, जिसमें रात की शूटिंग के लिए ड्रोन और रोशनी का उपयोग शामिल है। मटेरा और नेपल्स के अलावा, अन्य सलार लोकेशन में रोम और बुडापेस्ट शामिल हैं।सूत्रों के मुताबिक पैन-इंडिया फिल्म में प्रभास दोहरी भूमिका निभाते नजर आएंगे।कथानक का विवरण अभी अधूरा है, सलार को विभिन्न देशों के दो युवाओं के बारे में कहा जाता है जो दूरी और सांस्कृतिक अंतर के बावजूद प्यार में पड़ जाते हैं और कई चुनौतियों को पार करते हैं।थ्रिलर की पहली किस्त 28 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेलुगु और कन्नड़, तमिल, मलयालम, हिंदी और अंग्रेजी में डब किए गए संस्करणों में रिलीज होगी।

रोमांचक मुकाबले में सीहोर मिनी ने सीहोर वाइस को 1-0 से हराया

सीहोर। शहर के चर्च मैदान पर खेली जा रही जिला फुटबाल एसोसिएशन के तत्वाधान में बेबी लीग फुटबाल प्रतियोगिता में शामिल नन्हे खिलाड़ियों का उत्साह चरम पर है। प्रतियोगिता में हर मैच में इन नन्हें खिलाड़ियों में जोश बड़ता जा रहा है। अपनी प्रतिभा के बल पर खिलाड़ी शानदार प्रदर्शन करते नजर आ रहे हैं। मंगलवार को अंडर-10 और अंडर-13 के चार मुकाबले खेल गए थे। इसमें पहले मैच में अंडर-10 ग्रुप में सीहोर मिनी वाइस ने सीहोर वाइस को 1-0 से हराया। दूसरा मैच सीहोर क्लब और सीहोर चिल्ड्रन के मध्य खेला गया। इस मुकाबले में दोनों ही टीम 2-2 से बराबर रही। इसके अलावा अंडर-13 के पहले मुकाबले में सीहोर चिल्डन की टीम ने सीहोर वाइस को 1-0 से हराया। दूसरा मैच आरएसआई और डायमंड क्लब के मध्य खेला गया। इस मुकाबले में डायमंड ने 2-0 से जीत हासिल की।

जानकारी के अनुसार अंडर-10 में दो मैच खेला गया। इसमें पहला मैच सीहोर मिनी बॉयज विरोध सीहोर वॉइस के मध्य खेला गया जिसमें सीहोर मिनी वॉइस एक जीरो से विजयी रही। सीहोर मिनी बॉयज की तरफ से अक्षत ने 16 मिनट में गोल कर अपनी टीम को विजय दिलाई दूसरा में सीहोर क्लब और सीहोर चिल्ड्रन के मध्य खेला गया जिसमें यह मैच 2-2 की बराबरी पर रहा। सीहोर क्लब की तरफ से जय ने 15 मिनट में पहला गोल और दूसरा गोल 18 मिनट में किया। सीहोर चिल्ड्रन की तरफ से अथर्व ने 8 मिनट में एक गोल किया। पार्थ ने 12 मिनट में दूसरा गोल किया। अंडर 13 में 2 मैच खेले गए पहला मैच सीहोर बॉयज विरोध सीहोर चिल्ड्रन के मध्य खेला गया जिसमें सीहोर चिल्ड्रन एक जीरो से विजय रही। सीहोर चिल्ड्रन की तरफ से विनायक सेन ने 12 मिनट में गोल कर अपनी टीम को विजय दिलाई दूसरा मैच आरएसआई विरुद्ध डायमंड क्लब के मध्य खेला गया जिसमें डायमंड क्लब 2-1 से विजय रही आर एस आई की तरफ से यश राजपूत में 13 मिनट में गोल किया डायमंड क्लब की तरफ से सानिध्य शर्मा ने 15 मिनट में गोल किया रोनक वर्मा ने 20 मिनट में खुलकर अपनी टीम को विजय दिलाई। इन मैचों के निर्णायक रहे दीपक अहिरवार एलेन डोमिनिक, तरुण प्रजापति, इशांत मिश्रा, रोहित मालवीय, विशाल अहिरवार, आदित्य शास्त्र, सोनाक्षी मुले, दृष्टि केवट थे। मैच के शुभारंभ अवसर पर बेबी लीग फुटबॉल प्रतियोगिता के छठे दिन अंडर 10 अंडर 30 के बीच कांटे के मुकाबले में किस-किस के अंडर 10 जिओ मनी 80 और 22 के बीच खेला गया आज के मुख्य अतिथि भारतीय पत्रकार संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रघुवर दयाल गोहिया, वरिष्ठ खिलाड़ी शैलेंद्र पहलवान ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर अपनी ओर से शुभकामनाएं दीं। श्री गोहिया ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए बताया कि यह आपका सौभाग्य है कि आप बेबी लिफ्ट बॉल प्रतियोगिता फुटबॉल स्टार्ट कर रहे हैं। आगे जाकर आप देश और दुनिया में सीहोर जिले का नाम रोशन करेंगे। अच्छा खिलाड़ी बनने के लिए डिसिप्लिन मेंटेन करना रहता है। अनुशासित खिलाड़ी को ऊंचाई तक लेकर जाता है। खेल से अपनी लाइफ को सर्वश्रेष्ठ बनाएं। शैलेंद्र पहलवान ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए दुनिया के सबसे लोकप्रिय खेल को आप खेल रहे हैं इस खेल में आपको कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा दुनिया मैं ऐसा कोई देश नहीं है जहां फुटबॉल नहीं होती फुटबॉल के लिए 200 मिनट का स्टैमिना चाहिए मेरी ओर से आपको शुभकामनाएं अच्छे पड़ें अच्छा खेल का प्रदर्शन करें प्रदेश और देश का नाम रोशन करें देवीलाल प्रतियोगिता में आज 12 मार्च हो चुके हैं अभी तक स्टेट बैंक के वरिष्ठ खिलाड़ी रमेश मामा जी नेशनल प्लेयर खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए शुभकामनाएं दीं।

कलेक्टर के आदेश के बावजूद भी कई गाड़ियां रात में पशु आहार चारा, भूसा, तूरी लेकर निकल रही है : रक्षपाल सिंह कुशवाह

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य रक्षपाल सिंह कुशवाह ने भिंड जिले में अवैध रूप से सरसों एवं चना का भूसा एवं पशु आहार जिले की सीमा से बाहर निकाला जा रहा है इस मामले को लेकर उन्होंने जिला कलेक्टर को संज्ञान में लाकर पूर्ण रूप से प्रतिबंधित करने के लिए आग्रह किया था इसके बावजूद भी उनके आदेश का पालन न करते हुए अवैध रूप से ट्रक ओवर लोडिंग के साथ निकाले जा रहे हैं इन पर आज तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है। श्री कुशवाह ने कहा कि जिला कलेक्टर द्वारा पत्र जारी करने के बावजूद भी सारी गाड़ियां रात में धान भूसा, चना भूसा, सरसों भूसा,लेकर निकाली जा रही है जबकि जिलाधीश ने पूर्ण प्रतिबंध लगाने के आदेश जारी कर दिए हैं इसके बाद भी रातों-रात में गाड़ियां भरकर पुलिस के जन सहयोग के साथ निकालकर पशु हार को बाहर पहुंचाया जा रहा है जोकि भिंड जिले में पशु आहार की काफी आवश्यकता है। बेरिया पर ओवर लोडिंग का चालान बनाकर पुलिस के कर्मचारी छोड़ देते हैं। उन्होंने कहा किअपने जिला का पशुओं चारा अपने जिले से उतरप्रदेश जा रहा है **अपने जिले का पशुओं आहार व चारा अपने जिले से बहार न जाए**-अपने जिले के किसानो पशुओं आहार व चारे का किलत बढ़ती जा रही है जिले से बहार पशुओं आहार व चारा नहीं जाएं। किसानों की ये मांग है हमारे जिले के पशुओं का आहार व चारा भिण्ड से बाहर न जाए। भिंड जिले के किसानों को महंगी भी कीमत पर भूसा चारा पशु आहार खरीदना पड़ रहा है। श्री कुशवाह ने कहा कि जिला कलेक्टर ने अपने आदेश पत्र में स्पष्ट निर्देश कर दिए थे की आदेश के उल्लंघन करने की दिशा में संबंधित के विरुद्धण

भारतीय दंड संहिता की धारा 188 एवं अधिनियमों के अंतर्गत दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी इसके बावजूद भी पशु आहार के के सभी ट्रक रात को 11 से लेकर के 2 तक के बीच निकाले जा रहे हैं जिससे जिले के किसानों को भारी परेशानियां हो रही है। उन्होंने कहा कि कि जिला कलेक्टर के आदेश का पालन करते हुए पशु हार को ले जाने वाली सभी गाड़ियों पर पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जाए ताकि पशु आहार को जिले में ही रखा जाए बाहर ना भेजा जाए जिससे ए पशुओं को भी चारा मिले। उन्होंने पुलिस के संबंधित थाने में पदस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों से कहा कि अवैध रूप से संचालक हो रहे गाड़ियों पर और उसे प्रतिबंधित कर उन पर कार्रवाई की जाए।

महाराज बाडा पर दुकानों के एक समान फसाड को करने के लिए कलेक्टर ने मार्केट प्रतिनिधिगणो से की चर्चा

ग्वालियर। ग्वालियर के महाराज बाड़े पर बनी दुकानो को जयपुर की तर्ज पर सजाया जायेगा। हैरीटेज लुक के साथ

सभी दुकानें एक जैसी दिखें। इसके लिये कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह ने मंगलवार को स्मार्ट सिटी ऑफिस में महाराज बाड़े के व्यवसाइयों के साथ चर्चा की। इस मौके पर सीईओ स्मार्ट सिटी श्रीमती नीतू माथुर, पूर्व विधायक रमेश अग्रवाल, जनप्रतिनिधि पीताम्बर सिंह सहित व्यापारीगण उपस्थित थे। कलेक्टर सिंह ने कहा कि ग्वालियर का महाराज बाडा क्षेत्र ग्वालियर का मुख्य व्यावसायिक क्षेत्र होने के साथ ही हृदय स्थल और शहर की पहचान है। बैठक में दुकानों के फसाड को एक समरूपता देकर महाराज बाडा को और अधिक खुबसुरत बनाने के लिये यहाँ के दूकानदारो को आगे आना होगा और एकमत होकर इस कार्य को करना होगा। बैठक में उपस्थित प्रतिनिधि सदस्यो ने भी इस बात पर सहमति जताते हुये इस कार्य को करने की इच्छा जाहिर की। बैठक में इस कार्य को लेकर एक प्रजेण्टेशन भी दिखा गया। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि जल्द ही महाराज बाडा पर ही सभी व्यवसायियो के साथ एक बडी बैठक कर इस कार्य को करने के लिये सहमति बनाई जायेगी।

जिला पंचायत सीईओ दूरस्थ गाँवों में पहुँचे, लाड़ली बहना योजना पंजीयन की जानी जमीनी हकीकत

ग्वालियर । मुख्यमंत्री ला?ली बहना योजना और ग्रामीण क्षेत्र में चल रहीं विभिन्न योजनाओं की जमीनी हकीकत देखने मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत विवेक कुमार मंगलवार को डबरा जनपद के विभिन्न गाँवों में पहुँचे और ग्रामीणों से चर्चा की। उन्होंने मैदानी अमले को निर्देशित किया है कि मुख्यमंत्री ला?ली बहना योजना के साथ ही अन्य कल्याणकारी योजनाओं के पात्र शतप्रतिशत लोगो को लाभ मिले, यह सुनिश्चित किया जाए। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत विवेक कुमार ने डबरा विकासखंड के ग्राम पंचायत बारौल की आदिवासी दफाई में सहरिया पोषण आहार अनुदान योजनांतर्गत महिलाओं को प्राप्त होने वाली राशि के संबंध में संबंधित महिलाओं से चर्चा की। चर्चा के दौरान बताया गया कि कुल 86 सहरिया महिलाओं को पोषण आहार अनुदान योजनांतर्गत राशि प्राप्त हो रही है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया है कि 23 वर्ष से 59 वर्ष तक की महिलाओं के नाम लाड़ली बहना योजना में जोड़े जाएँ। आदिवासी महिलाओं द्वारा काम की माँग करने पर मनरेगा के माध्यम से संबंधित लोगों को रोजगार देने के निर्देश भी दिए गए। सीईओ विवेक कुमार ने सहरिया बस्ती में निवासरत

परिवारों के घरों का भी निरीक्षण किया एवं प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत नियमानुसार आवास उपलब्ध कराने के संबंध में संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने डबरा विकासखंड के ग्रामों का भी भ्रमण किया। जनपद पंचायत डबरा में स्थापित कंट्रोल रूम का निरीक्षण किया। इसके साथ ही गूगल मीट के माध्यम से डबरा विकासखंड के समस्त सचिव, जीआरएस, पीसीओ, एडीईओ और आंगनबा?ी कार्यकर्ताओं की बैठक ली। उन्होंने गूगल मीट के माध्यम से समीक्षा के दौरान निर्देशित किया कि ला?ली बहना योजना के अंतर्गत पंजीयन, आधार सीडिंग एवं डीबीटी के संबंध में तत्परता से कार्रवाई की जाए। ग्राम पंचायत लोहगड़ के निरीक्षण के दौरान ला?ली बहना योजना के अंतर्गत कार्य संतोषजनक न पाए जाने पर संबंधित कर्मचारियों के विरूद्ध कार्रवाई करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही ग्राम पंचायत झाड़ौली में 194 पंजीयन शेष होने के कारण नाराजगी व्यक्त की। इसके पश्चात ग्राम पंचायत बारौल में भी 123 पंजीयन शेष होने के कारण तथा प्रोपर अभिलेख संधारण न होने पर संबंधित कर्मचारियों के विरूद्ध कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने ग्राम मकोड़ा में भी लाड़ली बहना योजना का कार्य देखा।

कलेक्टर ने एलएनटी कंपनी के धीमे कार्य पर लगाई फटकार, स्मार्ट सिटी सीईओ ने लगाया 20 हजार का जुर्माना

ग्वालियर। महाराज बाड़े पर एलएनटी कंपनी द्वारा स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत किए जा रहे कार्यों की धीमी रफ्तार पर कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह ने नाराजगी जताई। साथ ही कंपनी के खिलाफ कार्रवाई करने के निर्देश दिए। काम की प्रगति ठीक न पाए जाने पर स्मार्ट सिटी सीईओ श्रीमती नीतू माथुर ने एलएनटी कंपनी पर 20 हजार रूपए की पैनल्टी लगा दी है। कलेक्टर सिंह ने मंगलवार को स्मार्ट सिटी के कार्यों का अवलोकन किया। जिसमें चिड़ियाघर के समीप बने स्मार्ट वॉशरूम कैफेटेरिया शामिल है। उन्होंने कैफेटेरिया के आस-पास के क्षेत्र को और सुंदर बनाने की दिशा में कार्य करने के साथ ही स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने की बात इस अवसर पर कही। कलेक्टर श्री सिंह ने महाराज बाड़े पर स्मार्ट सिटी द्वारा विकसित किए जा रहे पेडेस्ट्रियन जोन, मल्टी लेवल कार पार्किंग का भी अवलोकन किया। इसके साथ ही विक्टोरिया मार्केट में बने जूलॉजिकल म्यूजियम भी देखा।

उत्कृष्ट विद्यालय के विपनेट क्लब को मिली आउटस्टैंडिंग कैटेगरी, विज्ञान जागरूकता के लिए उत्कृष्ट कार्य पर ऑल इंडिया विशिष्ट क्लब में हुआ चयन

पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर / शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय मुरार के विज्ञान प्रसार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार से संबद्ध विपनेट क्लब विज्ञान बाल जन ग्रुप को वार्षिक विज्ञान व खगोलीय गतिविधियों के आयोजन के आधार पर ग्वालियर चंबल संभाग से एकमात्र सिल्वर कैटेगरी विपनेट क्लब को वर्ष 2022 में विज्ञान जागरूकता के लिए उत्कृष्ट कार्य पर ऑल इंडिया आउटस्टैंडिंग क्लब में स्थान प्राप्त हुआ है । जो ग्वालियर संभाग के लिए गौरव की बात है। क्लब कोऑर्डिनेटर डॉ. दीप्ति गौड़ ने बताया कि विज्ञान प्रसार से ऑल इंडिया लगभग 300 विपनेट क्लब रजिस्टर्ड है । जिनमें राष्ट्रीय स्तर पर अपने क्लब की शानदार उपलब्धि से उन्हें आगामी गतिविधियों हेतु और प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है। समाज को वैज्ञानिक सोचों से प्रगति की राह पर ले जाने का प्रयास कर रही हूं । उत्कृष्ट विद्यालय प्राचार्य प्रबुद्ध गर्ग ने इस उपलब्धि पर कहा कि क्लब से विद्यालय के 1080 बच्चे जुड़े हुए हैं। उत्कृष्ट विद्यालय मुरार में सतत रूप से विपनेट क्लब की गतिविधियों आयोजित की जाती है जिनका उद्देश्य अंधविश्वास उन्मूलन, सामाजिक जागरूकता, वैज्ञानिक चेतना विद्यार्थियों में जगाना है । इस हेतु भविष्य में भी गतिविधियां आयोजित करवाई जाएंगी । जिससे बच्चे समाज को वैज्ञानिक सोच दे सकें । इस उपलब्धि पर डॉ. नकुल पाराशर, निदेशक विज्ञान प्रसार, डॉ. के बी भूषण, साइंटिस्ट-ई विज्ञान प्रसार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग नई दिल्ली द्वारा ऑनलाइन प्रशस्ति पत्र के द्वारा सम्मान एवं शुभकामनाएं प्रेषित की गई हैं । चयनित क्लब को प्रशस्ति पत्र, एजुकेशनल किट, बुक्स आदि भेंट कर सम्मानित किया जाएगा । गौरतलब है ऑल इंडिया विपनेट क्लब विज्ञान प्रसार नई दिल्ली से रजिस्टर्ड हैं जिनकी गतिविधियों की सतत मॉनिटरिंग विज्ञान प्रसार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार द्वारा की जाती है तथा उत्कृष्ट क्लब्स को विज्ञान पुस्तकें, विज्ञान किट आदि पुरस्कार स्वरूप उपलब्ध कराई जाती हैं। डॉ. दीप्ति की विज्ञान जागरूकता संबंधी कविताओं को विज्ञान प्रसार की राष्ट्रीय विज्ञान पत्रिका क्यूरोसिटी में भी प्रकाशित किया गया है ।

सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के तीन पहिया वाहन चालकों को थाना प्रभारी ने पढ़ाया यातायात नियमों का पाठ

समस्त चालकों को गुलाब का फूल भेंट कर यातायात नियमों का पालन करने की दी समझाईश, यातायात नियमों का पालन नहीं करने पर की जावेगी चालानी कार्यवाही

महेंद्र शर्मा उपसंपादक पुष्पांजलि टुडे

मेहगांव। पुलिस मुख्यालय भोपाल द्वारा 24 से 30 अप्रैल 2023 तक संपूर्ण प्रदेश में संयुक्त सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है ,इसी तारतम्य में श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय श्री शैलेंद्र सिंह चौहान ,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महोदय श्री कमलेश कुमार खरपूसे तथा एसडीओपी महोदय मेहगांव श्री आर के एस राठौर के निर्देशन में थाना प्रभारी मेहगांव निरीक्षक रविंद्र शर्मा द्वारा तीन पहिया वाहन चालकों को थाने पर बुलाकर उनकी मीटिंग ली गई मीटिंग के दौरान भिंड तिराहा, गोरमी तिराहा,हाट बाजार तथा अन्य भीड़भाड़ वाले स्थानों पर रोड पर जगह-जगह वाहनों को नहीं खड़ा करने, क्षमता से अधिक सवारी का परिवहन नहीं करने, हाईवे पर अनावश्यक रूप से वाहन नहीं खड़ा करने, अत्याधिक गति से वाहन नहीं चलाने की हिदायत दी । अधिकांश तह देखा जाता है बस या अन्य कोई सवारी वाहन जब हाईवे पर आकर रूकता है तो उसके आसपास तीन पहिया वाले इकट्ठा हो जाते हैं और हाईवे पर चारों तरफ से उस सवारी वाहन को घेर लेते हैं जिससे जाम की स्थिति पैदा हो जाती है यही हाल बाजार में भी होता है, यातायात को सुचारू तथा निर्बाध रूप से चलाने हेतु थाना प्रभारी मेहगांव ने की पहल।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478